RNI No. GUJHIN/2011/39228
GARVI GUJARAT
गरवी गुजरात
गरवी गुजरात
अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक
वर्ष : 15
अंक : 294
दि. 25.02.2026,
बुधवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

अपनी जड़ों की ओर लौटता एक राज्य: 'केरल' से 'केरलम' बनने की ऐतिहासिक पहल

जीएनएस)। भारत जैसे विविधताओं से भरे देश में किसी राज्य का नाम केवल भौगोलिक पहचान नहीं होता, बल्कि वह उस क्षेत्र की भाषा, संस्कृति, इतिहास और आत्मसम्मान का प्रतीक होता है। इसी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए केंद्र सरकार की केंद्रीय कैबिनेट ने 'केरल' राज्य का नाम बदलकर 'केरलम' करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। यह निर्णय केवल एक प्रशासनिक बदलाव नहीं, बल्कि राज्य की मूल भाषाई और सांस्कृतिक पहचान को सम्मान देने का प्रयास है, जो लंबे समय से वहां के लोगों की भावना से जुड़ा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई केंद्रीय कैबिनेट की बैठक में इस प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की गई। यह प्रस्ताव राज्य की ओर से पिनरई विजयन के नेतृत्व वाली सरकार ने भेजा था। राज्य सरकार का मानना है कि 'केरलम' शब्द राज्य की मूल भाषा मलयालम में प्रयोग किया जाने वाला वास्तविक नाम है, जबकि 'केरल' उसका अंग्रेजी और बाहरी रूप है। इस प्रकार यह परिवर्तन राज्य की मूल पहचान को पुनर्स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास माना जा रहा है।

यह निर्णय अचानक नहीं लिया गया, बल्कि इसके पीछे एक लंबी संवैधानिक और राजनीतिक प्रक्रिया रही है। जून 2024 में राज्य विधानसभा ने संविधान के अनुच्छेद 3 के अंतर्गत राज्य का नाम बदलने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया था। इस प्रस्ताव का समर्थन केवल सत्तारूढ़ दल ने ही नहीं, बल्कि विपक्ष और अन्य राजनीतिक दलों ने भी किया, जो इस बात का प्रमाण है कि यह मुद्दा राजनीतिक मतभेदों से ऊपर उठकर राज्य की सामूहिक भावना से जुड़ा हुआ है। राज्य सरकार का तर्क था कि 'केरलम' नाम राज्य की भाषा, संस्कृति और ऐतिहासिक परंपरा को अधिक सटीक रूप से दर्शाता है।

अब केंद्रीय कैबिनेट की मंजूरी मिलने के बाद यह प्रस्ताव संसद के दोनों सदनों में प्रस्तुत किया जाएगा। संसद में पारित होने और राष्ट्रपति की स्वीकृति मिलने के बाद आधिकारिक अधिसूचना जारी की जाएगी, जिसके बाद राज्य का नाम सभी सरकारी दस्तावेजों और प्रशासनिक अभिलेखों में 'केरलम' हो जाएगा। यह प्रक्रिया भले ही औपचारिक और संवैधानिक हो, लेकिन इसका सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व अत्यंत गहरा है।

'केरलम' नाम का इतिहास अत्यंत प्राचीन और गौरवशाली है। प्राचीन भारतीय शिलालेखों और ऐतिहासिक ग्रंथों में इस क्षेत्र का उल्लेख 'केरलपुत्र' के रूप में मिलता है। यह नाम चेरा राजवंश से जुड़ा हुआ है, जिसने इस क्षेत्र पर लंबे समय तक शासन किया था।

इतिहासकारों का मानना है कि 'केरलम' शब्द की उत्पत्ति 'चेर' और 'अलम' शब्दों से हुई है, जिसमें 'अलम' का अर्थ भूमि या क्षेत्र होता है। इस प्रकार 'केरलम' का अर्थ हुआ 'चेरों की भूमि' या 'एकीकृत क्षेत्र', जो इस राज्य की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक एकता को दर्शाता है।

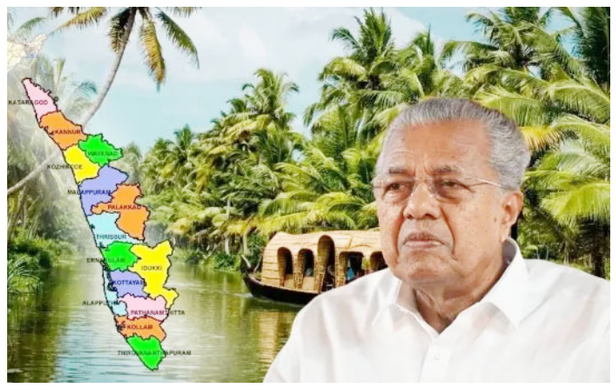

इस निर्णय के पीछे भाषाई गौरव की भावना भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मलयालम भाषा राज्य की आत्मा है और 'केरलम' उसी भाषा का मूल रूप है। जब राज्य का आधिकारिक नाम भी उसी भाषा के अनुरूप होता है, तो यह स्थानीय लोगों के आत्मसम्मान और सांस्कृतिक गौरव को और अधिक मजबूत करता है। यह परिवर्तन राज्य के लोगों को अपनी जड़ों से और अधिक गहराई से जोड़ने का अवसर प्रदान करेगा।

यह भी उल्लेखनीय है कि भारत में इससे पहले भी कई राज्यों और शहरों के नाम बदले जा चुके हैं, जिनका उद्देश्य स्थानीय भाषा और सांस्कृतिक पहचान को सम्मान देना था। समय के साथ यह समझ विकसित हुई है कि किसी स्थान का नाम उसकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। इसलिए जब कोई राज्य अपने मूल नाम को अपनाता है, तो वह केवल एक शब्द नहीं बदलता, बल्कि अपनी पहचान को पुनः स्थापित करता है।

इस निर्णय का राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव भी महत्वपूर्ण हो सकता है। राज्य में आगामी विधानसभा चुनाव होने वाले हैं, और ऐसे समय में यह निर्णय लोगों के बीच सांस्कृतिक गौरव और पहचान की भावना को और अधिक मजबूत कर सकता है। हालांकि राज्य सरकार और केंद्र सरकार दोनों ने स्पष्ट किया है कि यह निर्णय किसी राजनीतिक लाभ के लिए नहीं, बल्कि राज्य की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान को सम्मान देने के उद्देश्य से लिया गया है।

केंद्रीय कैबिनेट की इस बैठक में केवल नाम परिवर्तन का निर्णय ही नहीं लिया गया, बल्कि देश के विकास से जुड़े कई अन्य महत्वपूर्ण फैसले भी किए गए। रेलवे परियोजनाओं के विस्तार, एयरपोर्ट टर्मिनल के निर्माण, मेट्रो विस्तार और कृषि क्षेत्र से जुड़े निर्णय इस बात का संकेत हैं कि सरकार देश के बुनियादी ढांचे और आर्थिक विकास को मजबूत करने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है।

'केरल' से 'केरलम' बनने की यह प्रक्रिया केवल प्रशासनिक परिवर्तन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रतीक है। यह निर्णय राज्य के लोगों को अपनी भाषा, संस्कृति और इतिहास पर गर्व करने का अवसर देगा और आने वाली पीढ़ियों को अपनी जड़ों से जुड़ने की प्रेरणा प्रदान करेगा। यह परिवर्तन इस बात का भी प्रतीक है कि भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में प्रत्येक राज्य की अपनी विशिष्ट पहचान है, और उस पहचान का सम्मान करना राष्ट्रीय एकता को और अधिक मजबूत बनाता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि 'केरलम' नाम केवल एक नया शब्द नहीं, बल्कि एक पुरानी पहचान का पुनर्जन्म है। यह निर्णय राज्य के इतिहास, भाषा और सांस्कृतिक विरासत को सम्मान देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। जब कोई राज्य अपनी मूल पहचान को अपनाता है, तो वह केवल अपने अतीत को नहीं अपनाता, बल्कि अपने भविष्य को भी एक नई दिशा और नई ऊर्जा प्रदान करता है। 'केरलम' नाम इसी नई चेतना और सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक बनकर उभरेगा, जो आने वाले समय में राज्य की पहचान को और अधिक सशक्त और गौरवपूर्ण बनाएगा।

अब किताबों में छिपा नहीं रहेगा सच, आठवीं के छात्र जानेंगे न्यायपालिका की चुनौतियों और जिम्मेदारियों की वास्तविक कहानी

जीएनएस)। भारत की शिक्षा व्यवस्था एक नए और महत्वपूर्ण बदलाव के दौर से गुजर रही है, जहां अब केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित रहने के बजाय छात्रों को वास्तविक जीवन की सच्चाइयों और संस्थाओं की चुनौतियों से भी परिचित कराया जा रहा है। इसी दिशा में एक ऐतिहासिक कदम उठाते हुए नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग ने कक्षा 8 की सामाजिक विज्ञान की नई पाठ्यपुस्तक में न्यायपालिका से जुड़ा एक ऐसा अध्याय शामिल किया है, जो न केवल छात्रों को अदालतों की भूमिका बताएगा, बल्कि न्यायिक प्रणाली के सामने मौजूद गंभीर समस्याओं से भी अवगत कराएगा। यह कदम केवल पाठ्यक्रम में बदलाव नहीं है, बल्कि यह उस सोच का प्रतीक है, जिसमें नई पीढ़ी को जागरूक, जिम्मेदार और समझदार नागरिक बनाने की दिशा में प्रयास किया जा रहा है।

नई पुस्तक में शामिल 'हमारे समाज में ज्यूडिशियरी की भूमिका' नामक अध्याय में छात्रों को पहली बार यह बताया जाएगा कि न्यायपालिका केवल कानून की रक्षा करने वाली संस्था ही नहीं है, बल्कि यह भी एक ऐसी प्रणाली है, जिसे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इस अध्याय में न्यायपालिका में भ्रष्टाचार और लंबित मामलों की समस्या जैसे संवेदनशील विषयों को भी शामिल किया गया है। यह विषय पहले की पुस्तकों में नहीं होते थे, जहां अदालतों की संरचना, उनके अधिकार और कार्यप्रणाली पर ही मुख्य रूप से ध्यान केंद्रित किया जाता था। अब छात्रों को यह समझाया जाएगा कि न्याय प्रणाली में पारदर्शिता और निष्पक्षता बनाए रखना कितना महत्वपूर्ण है और इसके सामने कौन-कौन सी बाधाएं मौजूद हैं।

इस अध्याय में दिए गए आंकड़े न्यायपालिका की वास्तविक स्थिति को स्पष्ट रूप से सामने रखते हैं। देश की सबसे बड़ी अदालत सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया में लगभग 81 हजार मामले लंबित हैं। इसके अलावा देश के विभिन्न राज्यों के उच्च न्यायालयों में करीब 62 लाख 40 हजार मामले अभी भी फैसले की प्रतीक्षा कर रहे हैं। सबसे अधिक दबाव जिला और अधीनस्थ न्यायालयों पर है, जहां लगभग 4 करोड़ 70 लाख मामले लंबित हैं। ये आंकड़े यह दर्शाते हैं कि न्याय प्राप्त करना कई बार एक लंबी और कठिन प्रक्रिया बन जाता है, जिससे आम नागरिकों को वर्षों तक इंतजार करना पड़ता है।

यह स्थिति केवल कानूनी समस्या नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और मानवीय समस्या भी है। जब किसी व्यक्ति को न्याय पाने के लिए लंबे समय तक इंतजार करना पड़ता है, तो उसका विश्वास प्रणाली पर कमजोर हो सकता है। यही कारण है कि छात्रों को इस विषय के बारे में जागरूक करना अत्यंत आवश्यक माना गया है, ताकि वे भविष्य में एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में न्याय और कानून के महत्व को समझ सकें।

स्वाद के नाम पर धोखा: अहमदाबाद के बड़े होटलों में नकली पनीर का खुलासा, खाद्य विभाग की बड़ी कार्रवाई

जीएनएस)। गुजरात के अहमदाबाद से खाद्य सुरक्षा को लेकर एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है, जिसने शहर के स्वाद प्रेमियों और आम उपभोक्ताओं दोनों को चिंता में डाल दिया है। अहमदाबाद नगर निगम (एएमसी) के खाद्य विभाग ने शहर के कई प्रतिष्ठित होटलों और रेस्तरां में छापेमारी कर बड़े पैमाने पर नकली पनीर के इस्तेमाल का खुलासा किया है। इस कार्रवाई में 170 किलो से अधिक नकली पनीर जब्त किया गया, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि उपभोक्ताओं की सेहत के साथ गंभीर खिलवाड़ किया जा रहा था। खाद्य विभाग की यह कार्रवाई अचानक और सुनियोजित तरीके से की गई, ताकि मिलावटखोरों को संभलने का मौका न मिले। जांच के दौरान जिन प्रतिष्ठित रेस्तरांओं में छापेमारी की गई, उनमें Barbeque Nation, The Leo Pizza, Real Paprika और Pizzarte जैसे नाम शामिल हैं। इन होटलों और रेस्तरांओं में परोसे जा रहे पनीर के नमूनों को जांच के लिए प्रयोगशाला भेजा गया था, जहां परीक्षण में पाया गया कि पनीर शुद्ध दूध से नहीं, बल्कि वनस्पति तेल और कम वसा वाले दूध जैसे घटिया और सस्ते विकल्पों से तैयार किया गया था।

प्रयोगशाला रिपोर्ट में इन नमूनों को निम्न गुणवत्ता का घोषित किया गया, जो न केवल उपभोक्ताओं के साथ धोखाधड़ी है, बल्कि

उनके स्वास्थ्य के लिए भी गंभीर खतरा बन सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार नकली पनीर में पोषण तत्वों की कमी होती है और इसमें इस्तेमाल होने वाले कृत्रिम तत्व लंबे समय में पाचन संबंधी समस्याएं, एलर्जी और अन्य स्वास्थ्य जटिलताओं का कारण बन सकते हैं। छापेमारी के दौरान कुल 173 किलोग्राम नकली पनीर और अन्य अनुपयोगी खाद्य सामग्री जब्त की गई। इसके अलावा खाद्य विभाग ने संबंधित 10 रेस्तरांओं पर 97,000 रुपये का जुर्माना भी लगाया। यह कार्रवाई केवल एक दिन तक सीमित नहीं रही, बल्कि पिछले एक सप्ताह के दौरान खाद्य विभाग ने व्यापक अभियान चलाते हुए कुल 6,72,000 रुपये का जुर्माना वसूला और 823 किलोग्राम ठोस तथा 878 लीटर तरल अनुपयोगी सामग्री को नष्ट किया। यह आंकड़े इस बात का प्रमाण हैं कि खाद्य मिलावट का नेटवर्क कितना व्यापक और चिंताजनक हो सकता है।

खाद्य विभाग ने दूध और दूध से बने उत्पादों के 495 नमूनों को आगे की जांच के लिए प्रयोगशाला भेजा है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि शहर में कहीं और भी इस प्रकार की मिलावट तो नहीं हो रही है। अधिकारियों का कहना है कि यह अभियान केवल शुरुआत है और भविष्य में भी ऐसे निरीक्षण नियमित रूप से जारी रहेंगे।

इस कार्रवाई ने उपभोक्ताओं को एक महत्वपूर्ण संदेश दिया है कि स्वाद और ब्रांड के नाम पर आंख मूंदकर भरोसा करना हमेशा सुरक्षित नहीं होता। कई बार प्रतिष्ठित और लोकप्रिय रेस्तरां भी लागत कम करने और मुनाफा बढ़ाने के लिए घटिया सामग्री का उपयोग करते हैं, जिससे ग्राहकों की सेहत खतरे में पड़ सकती है।

खाद्य विभाग के अधिकारियों ने स्पष्ट कहा है कि मिलावटखोरों के खिलाफ सख्त कार्रवाई जारी रहेगी और किसी भी कीमत पर उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य से समझौता नहीं किया जाएगा। उन्होंने नागरिकों से भी अपील की है कि वे भोजन की गुणवत्ता को लेकर जागरूक रहें और किसी भी संदिग्ध खाद्य पदार्थ की शिकायत तुरंत संबंधित विभाग को करें।

इस घटना ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या हम जो खा रहे हैं, वह वास्तव में सुरक्षित है। आज के दौर में जब बाहर खाना एक आम जीवनशैली का हिस्सा बन चुका है, तब खाद्य सुरक्षा और गुणवत्ता सुनिश्चित करना और भी महत्वपूर्ण हो गया है। उपभोक्ताओं को चाहिए कि वे केवल स्वाद ही नहीं, बल्कि भोजन की गुणवत्ता और विश्वसनीयता पर भी ध्यान दें।

अहमदाबाद में हुई इस कार्रवाई के बाद अब खाद्य विभाग पहले से कहीं अधिक सतर्क हो गया है और शहर में खाद्य पदार्थों की शुद्धता सुनिश्चित करने के लिए निगरानी और निरीक्षण को और मजबूत किया जा रहा है। यह कदम न केवल मिलावटखोरों के लिए एक चेतावनी है, बल्कि आम जनता के लिए भी एक भरोसा है कि उनकी सेहत की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है।

यह मामला एक चेतावनी भी है और एक सबक भी कि खाद्य सुरक्षा केवल सरकार या विभाग की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समाज और उपभोक्ताओं की भी सामूहिक जिम्मेदारी है। जागरूकता, सतर्कता और जिम्मेदारी के माध्यम से ही हम मिलावट जैसी गंभीर समस्या से प्रभावी रूप से मुकाबला कर सकते हैं और सुरक्षित तथा स्वस्थ समाज की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

वैश्विक मंच पर भारत की संसदीय कूटनीति को नई ताकत, 64 देशों के साथ मित्रता समूहों का गठन

जीएनएस)। भारत की लोकतांत्रिक परंपरा और वैश्विक प्रभाव को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए ओम बिरला ने 64 देशों के साथ पार्लियामेंट्री फ्रेंडशिप ग्रुप्स (पीएफजी) का गठन किया है। यह पहल केवल एक औपचारिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह भारत की संसदीय कूटनीति को वैश्विक स्तर पर सशक्त बनाने की एक रणनीतिक कोशिश मानी जा रही है। इन समूहों का उद्देश्य विभिन्न देशों के साथ संसदीय संवाद को बढ़ावा देना, आपसी सहयोग को मजबूत करना और लोकतांत्रिक मूल्यों के आदान-प्रदान के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय संबंधों को नई ऊंचाई देना है।

इन पार्लियामेंट्री फ्रेंडशिप ग्रुप्स में लोकसभा और राज्यसभा के कुल 704 सांसदों को शामिल किया गया है, जो यह दर्शाता है कि भारत की संसद वैश्विक स्तर पर सक्रिय और जिम्मेदार भूमिका निभाने के लिए प्रतिबद्ध है। प्रत्येक समूह में एक ग्रुप लीडर और 10 सदस्य नियुक्त किए गए हैं, जो संबंधित देश के साथ संसदीय संबंधों को मजबूत करने, संवाद स्थापित करने और सहयोग के नए अवसर तलाशने का कार्य करेंगे। यह संरचना इस तरह बनाई गई है कि विभिन्न राजनीतिक दलों और विचारधाराओं के सांसद मिलकर भारत का प्रतिनिधित्व करें और एक समन्वित और संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करें।

इस पहल के पीछे भारत की वैश्विक भूमिका को और अधिक प्रभावशाली बनाने का व्यापक दृष्टिकोण दिखाई देता है, जिसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत लगातार आगे बढ़ा रहा है। भारत आज केवल एक क्षेत्रीय शक्ति नहीं, बल्कि एक वैश्विक भागीदार के रूप में उभर रहा है, और इस दिशा में संसदीय कूटनीति एक महत्वपूर्ण साधन बनकर सामने आई है। जब सांसद विभिन्न देशों के सांसदों के साथ सीधे संवाद करते हैं, तो इससे न केवल राजनीतिक संबंध मजबूत होते हैं, बल्कि सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक सहयोग के नए रास्ते भी खुलते हैं।

इन समूहों के गठन में राजनीतिक संतुलन और समावेशिता का विशेष ध्यान रखा गया है। भारतीय जनता पार्टी के पास सर्वाधिक 30 ग्रुप लीडर पद हैं, जिनमें प्रमुख सांसदों को नेतृत्व की जिम्मेदारी दी गई है। वहीं कांग्रेस के 10 सांसदों को भी ग्रुप लीडर बनाया गया है, जिनमें शशि थरूर जैसे अनुभवी और अंतरराष्ट्रीय मामलों के जानकार नेता शामिल हैं। इसके अलावा समाजवादी पार्टी, डीएमके और तृणमूल कांग्रेस के तीन-तीन सांसदों को भी यह जिम्मेदारी दी गई है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह पहल किसी एक दल तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे देश का प्रतिनिधित्व करती है।

शिक्षा की ऊंचाइयों पर हिंदू समुदाय: प्यू रिसर्च की रिपोर्ट ने अमेरिका में बदलती सामाजिक तस्वीर को किया उजागर

जीएनएस)। अमेरिका जैसे विकसित और प्रतिस्पर्धी देश में शिक्षा को सफलता का सबसे बड़ा आधार माना जाता है। यहां विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों से जुड़े लाखों लोग रहते हैं, जो अपने ज्ञान, कौशल और मेहनत के बल पर देश की अर्थव्यवस्था और समाज को नई दिशा दे रहे हैं। इसी संदर्भ में Pew Research Center की हाल ही में जारी रिलीजियस लैंडस्केप स्टडी ने एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक तथ्य सामने रखा है। इस अध्ययन के अनुसार, अमेरिका में रहने वाला हिंदू समुदाय अब वहां का सबसे अधिक शिक्षित धार्मिक समूह बन चुका है। यह उपलब्धि न केवल हिंदू समुदाय की शैक्षणिक प्रगति को दर्शाती है, बल्कि यह भी बताती है कि उन्होंने अपनी मेहनत और लगन के बल पर वैश्विक स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है।

रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका में रहने वाले लगभग 70 प्रतिशत हिंदुओं के पास बैचलर डिग्री या उससे उच्च शिक्षा है। यह आंकड़ा अमेरिका के राष्ट्रीय औसत से लगभग दोगुना है, क्योंकि पूरे देश में केवल 35 प्रतिशत वयस्क ही कॉलेज स्तर की शिक्षा प्राप्त कर पाए हैं। इससे स्पष्ट होता है कि हिंदू समुदाय ने शिक्षा को अपने जीवन का केंद्रीय आधार बनाया है और इसे सफलता की कुंजी के रूप में अपनाया है। यह उपलब्धि इसलिए भी विशेष है क्योंकि पारंपरिक रूप से यहूदी समुदाय को अमेरिका में सबसे अधिक शिक्षित धार्मिक समूह माना जाता रहा है, लेकिन अब हिंदुओं ने उन्हें भी पीछे छोड़ दिया है।

इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ है

कि शिक्षा केवल व्यक्तिगत विकास का साधन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण का भी माध्यम है। अमेरिका में रहने वाले हिंदू समुदाय के लोग बड़ी संख्या में डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, प्रोफेसर, आईटी विशेषज्ञ और उद्यमी के रूप में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन में सफलता प्राप्त की है, बल्कि अमेरिकी समाज और अर्थव्यवस्था के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनकी उपस्थिति विशेष रूप से तकनीकी, चिकित्सा, वित्त और अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में अधिक देखी जा सकती है।

इस सफलता के पीछे कई कारण हैं। सबसे महत्वपूर्ण कारण यह है कि हिंदू समुदाय के अधिकांश लोग शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हैं। भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में शिक्षा को ज्ञान, आत्मविकास और सामाजिक सम्मान का आधार माना जाता है। यही कारण है कि जब भारतीय मूल के लोग अमेरिका जैसे देश में जाते हैं, तो वे अपनी इस परंपरा को बनाए रखते हैं और शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं। इसके अलावा अमेरिका में जाने वाले अधिकांश हिंदू पेशेवर पहले से ही उच्च शिक्षा प्राप्त कर चुके होते हैं या उच्च शिक्षा के उद्देश्य से वहां जाते हैं, जिससे उनका शैक्षणिक स्तर और भी मजबूत होता है।

रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि मुस्लिम, बौद्ध और ऑर्थोडॉक्स क्रिश्चियन समुदायों में भी शिक्षा का स्तर राष्ट्रीय औसत से बेहतर है। इन समुदायों के भी बड़ी संख्या में लोग उच्च शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं और विभिन्न पेशेवर क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं। हालांकि, कुछ धार्मिक समुदायों जैसे इवेंजेलिकल प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक समुदायों में कॉलेज स्तर की शिक्षा प्राप्त करने वाले लोगों की संख्या अपेक्षाकृत कम पाई गई है। इससे यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न धार्मिक समूहों के बीच शिक्षा के स्तर में महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है। यह अध्ययन 17 जुलाई 2023 से 4 मार्च 2024 के बीच किया गया, जिसमें कुल 36,908 अमेरिकी वयस्कों ने भाग लिया। यह सर्वे अमेरिका में धर्म और समाज के संबंधों को समझने के लिए अब तक के सबसे व्यापक अध्ययनों में से एक माना जाता है। इस अध्ययन का उद्देश्य केवल धार्मिक पहचान को समझना नहीं था, बल्कि यह भी जानना था कि विभिन्न धार्मिक समुदाय शिक्षा, रोजगार और सामाजिक जीवन में किस प्रकार योगदान दे रहे हैं।

हिंदू समुदाय की यह उपलब्धि केवल एक सांख्यिकीय तथ्य नहीं है, बल्कि यह प्रेरणा का एक स्रोत भी है। यह दर्शाता है कि शिक्षा के माध्यम से कोई भी समुदाय अपनी पहचान को मजबूत बना सकता है और वैश्विक स्तर पर सम्मान प्राप्त कर सकता है। यह सफलता उन लाखों युवाओं के लिए भी प्रेरणादायक है, जो अपने सपनों को साकार करने के लिए कठिन परिश्रम कर रहे हैं।

अमेरिका में हिंदू समुदाय की यह शैक्षणिक प्रगति यह भी दर्शाती है कि जब किसी समाज में शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है, तो वह समाज तेजी से प्रगति करता है और वैश्विक स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित करता है। यह उपलब्धि न केवल हिंदू समुदाय के लिए गर्व का विषय है, बल्कि यह पूरी भारतीय संस्कृति और परंपरा के लिए भी सम्मान का प्रतीक है।

आज के वैश्विक युग में, जहां प्रतिस्पर्धा लगातार बढ़ रही है, वहां शिक्षा ही वह शक्ति है जो व्यक्ति और समाज दोनों को आगे बढ़ने की क्षमता देती है। हिंदू समुदाय की यह सफलता इस बात का प्रमाण है कि ज्ञान, परिश्रम और दृढ़ संकल्प के बल पर कोई भी समुदाय नई ऊंचाइयों को छू सकता है। यह उपलब्धि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी और यह संदेश देगी कि शिक्षा ही वह मार्ग है, जो सफलता, सम्मान और आत्मनिर्भरता की ओर ले जाता है।

संपादकीय

भेदभाव की बीमार सोच

यह कोई नई बात नहीं है कि पूर्वोत्तर भारत के लोगों के साथ उनकी कद-काठी व संस्कृति को लेकर कहीं शेष देश में अभद्रता की गई हो। यहां तक कि एक बार तो पूर्वोत्तर के एक मुख्यमंत्री प्रेस वार्ता में यह कहते रो पड़े थे कि उन्हें भारतीय तक नहीं समझा जाता है। बीते साल मई में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूर्वोत्तर को 'हमारे विविधता के राष्ट्र में सबसे विशिष्ट क्षेत्र' बताया था। लेकिन अफसोस की बात यह है कि बार-बार भारत के इस विशिष्टता वाले पूर्वोत्तर को तरह-तरह से लांछित किया जाता रहा है। विडंबना है कि इन राज्यों के लोग अक्सर नस्लीय भेदभाव का शिकार होते रहे हैं। कुछ समय पूर्व देहरादून में त्रिपुरा के छात्र अंजेल चकमा की हत्या कर दी गई थी। इस घटना के दो महीने से भी कम समय बाद, दिल्ली में अरुणाचल प्रदेश की तीन महिलाओं को उनके पड़ोसियों ने कुत्सित शब्द 'धंधेवाली' से संबोधित किया और मोमो बेचने को कहा। यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि उन्हें अपने ही देश में, और वह भी देश की राष्ट्रीय राजधानी में बेगाना करार दे दिया गया। विडंबना यह है कि यह अभद्रता किसी झगड़े या आवेश की प्रतिक्रिया नहीं थी बल्कि यह पहचान और जातीयता पर लक्षित हमला था। इस घटनाक्रम के बाद एक व्यक्ति और उसकी पत्नी पर धर्म, जाति व जन्मस्थान आदि के आधार पर कटुता फैलाने के आरोप में मामला दर्ज किया गया है। इसके अलावा अन्य आरोप भी लगाए गए हैं। निस्संदेह, इस दंपति के आपत्तिजनक व्यवहार ने एक गहरे जख्म को ही उजागर किया है, जो 'सबका साथ, सबका विकास' की अवधारणा को सिरे से खारिज करने वाली सोच है। साल 2014 में नीदो तानिया की हत्या से लेकर 2025 में अंजेल चकमा की हत्या तक, यह दुराग्रहों का सिलसिला साफ नजर आता है। अक्सर आरोप लगाये जाते रहे हैं कि पूर्वोत्तर के छात्रों व श्रमिकों को उनकी शारीरिक बनावट, खान-पान और भाषा के आधार पर निशाना बनाया जाता है।

यह विडंबना ही है कि कुछ संकीर्ण लोग भारत की समृद्ध विविधता की विरासत का मर्म नहीं पहचानते हैं। किसी राज्य की भौगोलिक स्थिति, जलवायु व सदियों से चली आ रही संस्कृति हमारे रूप-रंग-भाषा व व्यवहार का निर्धारण करती है। कोस-कोस पर भाषा-पानी बदलने वाले देश की यह विविधता इसकी खूबसूरती भी है। इसके मर्म का सम्मान करना व अंगीकार करना हर भारतीय का दायित्व भी है। पर्वतीय इलाकों का परिवेश व जलवायु व्यक्ति के सरल, सहज, सौम्य व्यवहार व कद-काठी का भी निर्धारण करती है। पूर्वोत्तर समाज में स्त्री प्रधान पारिवारिक व्यवस्था तथा सार्वजनिक जीवन में उसकी महती भूमिका को शेष देश के लोगों द्वारा संशय से देखा जाता है। फलतः परस्पर विश्वास की इस सामाजिक व्यवस्था में स्त्री की भूमिका को लेकर नकारात्मक धारणाएं गढ़ ली जाती हैं। यही वजह है कि पूर्वोत्तर के लोगों द्वारा आरोप लगाया जाता कि उनकी महिलाओं को शक की नजर से देखा जाता है और उन पर बिना किसी आधार के अनैतिक गतिविधियों में शामिल होने के आरोप तक लगाए जाते हैं। देश के सर्वोच्च न्यायालय ने भी क्षेत्रीय पहचान को लेकर किए जाने वाले किसी भेदभाव के प्रति अक्सर चेताया है। निस्संदेह, कालांतर में पैदा होने वाली नस्लीय शत्रुता इस घटनाक्रम का ही एक घिनौना रूप है। हाल ही के दिल्ली प्रकरण में सबसे दुर्भाग्यपूर्ण पक्ष है सामाजिक श्रेष्ठता का दावा करना, किसी बड़े राजनेता से संबंध होने का रौब दिखाना और दूसरे को कमतर मान कथित 'औकात' के नाम पर उपहास करना। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि यह विशेषाधिकार जताने की भावना और गलत धारणा दर्शाती है कि कुछ भारतीय खुद को दूसरे भारतीयों से श्रेष्ठ मानने का भ्रम पाले हुए हैं। दिल्ली की घटना की तीन पीड़ितों के वकील, जो सिक्किम से आते हैं, ने दो टूक शब्दों में कहा है- 'हम भी उतने ही भारतीय हैं, जितने कोई और।' निर्विवाद रूप से प्रत्येक भारतीय को देश में कहीं भी गरिमापूर्ण जीवन जीने का अधिकार है। शासन-प्रशासन द्वारा यह सुनिश्चित करना कि किसी भी नागरिक को इस अधिकार से वंचित न किया जा सके, सही मायनों में भारत में बहुलवाद की वास्तविक परीक्षा भी है।

संज्ञानात्मक युद्ध : दांवपेच का सातवां रणक्षेत्र

> "मेघना नदी दस्तावेज की तार्किक सीख है कि भारत का संवैधानिक प्रारूप एक राजनीतिक विकल्प से कहीं अधिक है। यह संज्ञानात्मक लचीलेपन के लिए एक रणनीतिक संपत्ति है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और कृत्रिम नैरेटिव के युग में, हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था एक परम 'वितरित रक्षा' के रूप में कार्य करती है।

युद्ध का शब्दिक अर्थ अपनी परिभाषा से बाहर निकल चुका है। सदियों से, शक्ति का माप हल की नोक और युद्धपोत के पीछे बनने वाली लहरों से किया जाता रहा है। रणनीति ने भूमि, समुद्र, वायु, शांत गहराइयों, अंतरिक्ष के निर्वात और साइबर ग्रिड की टिमटिमाती शिराओं का मानचित्रण कर लिया है। आज एक सातवें कार्यक्षेत्र (डोमेन) ने चुपचाप रणनीति की धुरी को हर लिया है। एक अनुभूति : सबसे अंतरंग और सबसे व्यापक।

यह बदलाव अब और अधिक सैद्धांतिक नहीं रहा। पूर्वी यूरोप से लेकर पश्चिम एशिया तक और हमारी अपनी विवादित सीमाओं पर, युद्ध का दायरा पहले ही विस्तृत हो चुका है। प्रभाव अभियान अब प्रत्यक्ष कार्रवाई से पहले, उसके साथ और उसके बाद तक जारी रहता है। केंद्र बिंदु अब मंचों से धारणा की तरफ सरक रहा है, केवल मारक क्षमता से हटकर एकजुटता कायम रखने वाला समाज ही तनाव के दौरान बचा रह सकता है।

आधुनिक युद्धक्षेत्रों में, नैरेटिव की गति, सूचनागत आघात और सामाजिक लचीलेपन के जरिए परिणाम निरंतर आकार लेते जा रहे हैं। धारणा ने अब ओओडीए लूप्स, एस्केलेशन थ्रेशोल्ड और राजनीतिक निर्णय चक्रों को इस प्रकार संकुचित कर दिया है, जिसका अनुमान परंपरागत सिद्धांत पूरी तरह लगा नहीं पाए।

एकजुट रखने वाला कार्यक्षेत्र : राष्ट्र शक्ति का शून्य-

शून्य, भारतीय सभ्यता का एक योगदान, गणित में वह मूक गुणांक है जो पैमाना बनाता है। किसी राष्ट्र की संरचना में सामाजिक सामंजस्य वही बुनियादी भूमिका निभाता है। इस शून्य के बिना, शक्ति का अंकगणित अस्थिर हो जाता है। इसके बगैर, सबसे उन्नत गतिज ताकतें, मिसाइलें, उपग्रह और विमान वाहक बेड़े तक भी आकर्षण खो देते हैं। जब सामाजिक विश्वास भंग हो जाए, तो सैन्य क्षमता थम जाती है। जब दोनों एकीकृत हो जाएं, तो राष्ट्रीय शक्ति अधिक वेग से आगे बढ़ती है।

इसलिए संज्ञान आधुनिक युद्धों में जोड़ने वाले

डोमेन के रूप में उभरा है। इसकी एक सतह पर लोगों में एकता निहित है; दूसरी सतह पर युद्ध के छह पारंपरिक माध्यम संचालित होते हैं। प्रत्येक स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकता है, लेकिन उनकी असली क्षमता एकीकरण में निहित है। सातवें कार्यक्षेत्र में एकता वह जोड़ने वाला पदार्थ है जो सबको थामे रखता है।

नदी का सिद्धांत : क्षरण से घेराबंदी तक - भारत ने 1971 के युद्ध में इस गतिशीलता का आरंभिक प्रदर्शन देख लिया था। 'मेघना क्रॉसिंग', एक दुस्साहसिक नदी पारीय अभियान, जिसने ढाका के लिए राह खोल दी, इसने बलों की तैनाती से कहीं अधिक किया। इसने प्रतिद्वंद्वी की अपरिहार्यता की धारणा को बदलकर रख दिया।

जलीय बाधा के तर्क ने आगे बढ़ने की संभावना को खारिज कर रखा था, लेकिन वायुसैन्य प्रहारों और बख्तरबंद दस्तों वाले अभियान ने संज्ञानात्मक अनुभूति आघात दिया। प्रतिद्वंद्वी के पास गोला-बारूद ख़त्म नहीं हुआ था; बल्कि लड़ने की इच्छाशक्ति उखड़ गई थी। इस संज्ञानात्मक आघात ने आत्मसमर्पण गति को तीव्रता दी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में, 'मेघना सिद्धांत' पुनः तीव्र प्रासंगिकता प्राप्त कर गया है। सातवें डोमेन में, उद्देश्य संज्ञानात्मक घेराबंदी बनाना है: प्रतिद्वंद्वी द्वारा भंग करने से कहीं पहले, अपने प्रणालीगत संतुलन की संभाल लेना। यह लाभ संकट के दौरान कभी भी सुधारा नहीं जा सकता; इसे युद्धों के बीच के काल में निरंतर, कल्पनाशील प्रशिक्षण के माध्यम से ढालना पड़ता है।

भारत की संरचनात्मक उत्कृष्ट कृति : वितरित लचीलापन : अधिकांश आधुनिक शक्तियां किले जैसी हैं, केंद्रीकृत, भव्य, और अक्सर भंगुर। भारत अलग ढंग से विकसित हुआ है। यह एक जीवंत नेटवर्क के रूप में कार्य करता है। संविधान की प्रस्तावना सोर्स कोड के रूप में कार्य करती है। बहुलवाद उच्च स्तरीय झटका-अवशोषक के रूप में कार्य करता है। 'अनेकता में एकता' महज बयानबाजी के रूप में नहीं बल्कि वितरित रक्षा व्यवस्था के रूप में कार्य करती है।

चुनावी मंथन, भाषाई बहुलता और संघीय जटिलता गणतंत्र पर बार-बार दबाव डालकर इसका इम्तिहान लेती है। रणनीतिक गहराई उस संचित अनुभव से बनी है। 1.4 अरब अलग-अलग स्वरों का एक देश, जो लोकतांत्रिक सहमति से जुड़ा हुआ है, वह सूचनात्मक झटकों का असामान्य रूप से शक्तिशाली अवशोषक बन जाता है। वह शक्ति जो सामाजिक रूप से स्थिर नहीं होती, वह रणनीतिक रूप से नाजुक हो जाती है। 1962 के बाद का हर युद्ध इस सहनशक्ति का गवाह है।

एआई का दौर और डिजिटल ढांचा : कृत्रिम बुद्धिमत्ता धारणा और प्रतिक्रिया के बीच अंतराल को कम कर रही है। ऐसे माहौल में विश्वसनीयता खुद-ब-खुद युद्धक शक्ति का एक रूप बन जाती है। ड्रोन एक हवाई मशीन है, संज्ञान माध्यम है। भारत का डिजिटल सार्वजनिक आधारभूत ढांचा जनता के स्तर पर विश्वास निर्माण हेतु पहले से बना बनाया सांचा प्रदान करता है। सही ढंग से संचालित, ऐसे मंच सुनिश्चित कर सकते हैं कि धारणा और सत्यापन योग्य वास्तविकता के बीच अंतर खतरनाक रूप से न बढ़ने पाए।

यूक्रेन - एक तनाव परीक्षा : यूक्रेन-रूस संघर्ष सातवें डोमेन का तनाव के दौरान गहराई से परीक्षा का अवसर प्रदान करता है। सालों से जारी युद्ध में, अकेले युद्धक्षेत्र प्रदर्शन ने रणनीतिक सहनशीलता का निर्धारण नहीं किया है। नैरेटिव सुसंगतता, आर्थिक सहनशक्ति और राजनीतिक वैधता परंपरा को जारी रखे हुए है।

जो चीज़ लगातार दिखाई दे रही है, वह है लंबे समय से तनाव के बीच भी सामाजिक एकता की धुरी कायम रहना। जो राष्ट्र आंतरिक विश्वास बनाए रखेंगे, वे उद्देश्य पर लंबे समय तक टिके रह सकते हैं; जहां पर परस्पर भरोसा खंडित हो जाए, वहां पर रणनीतिक हानि जमा होती जाती है।

अपने स्थापना काल से ही, भारत ने 'वी द पीपल' (हम लोग) को मूल में रखा है और राष्ट्रीय स्तर पर अपनी नागरिक समरसता को क्रियान्वित किया है। सातवें डोमेन में, सहनशक्ति का प्रवाह न केवल मारक क्षमता से बनता है, बल्कि इसके पीछे मौजूद एकजुटता से तैयार होता है।

लंबे युद्ध की हकीकत : आधुनिक संघर्ष एक गतिज कृत्य होने के बजाए लंबे खिंचने वाले प्रणालीगत द्वंद्व में बदल चुका है। विस्तारित लड़ाइयों में, जो पक्ष सीखने के चक्र में महारत हासिल कर लेता है वह दिशा निर्धारित करता है, लेकिन सहनशक्ति उसी देश में प्रवाहित होगी, जो अपने नैतिक एवं संस्थागत आधार को संरक्षित रख पाएगा।

जीत अब एकमात्र सफलता नहीं रह गई है। समय और दूरी से परे, यह निर्णयगत लाभ को सतत रखना हो गया। कथात्मक प्रचार शिथिलता, निर्णय अधिभार, और संस्थागत फिसलन अब रणक्षेत्र में नुकसान की भांति हैं।

खुद सिद्धांत को अनुकूलन के लिए निरंतर मजबूर किया जा रहा है। रियल टाइम में क्रमिक विकास करने वाले संघर्षों में गैर-लचीली संहिता हाथ-पैर मारती रह जाती है। आधुनिक युद्धक्षेत्र उन संगठनों को पुरस्कृत करता है जो निरंतर सीखेंगे, बुद्धिमानी से विकेंद्रीकरण कर सकेंगे, और एकता खोए बगैर खुद को बदल सकते हैं। यहां फिर से, गहरा लाभ उन सामाजिक एवं संवैधानिक आधारों में निहित है जो दबाव के बावजूद स्पष्टता बनाए रखते हैं।

अंततः समरूपता : आखिरकार, सातवां डोमेन किसी राष्ट्र की आंतरिक स्थिति को दर्शाता है। कृत्रिम नैरेटिव्स और कृत्रिम प्रचार के युग में, लाभ उस समाज को होगा जो निरंतर तनाव के बीच एकजुटता कायम रखेगा। मशीन की अराजकता के विरुद्ध सबसे मजबूत बचाव 'हम लोग' की सतत सुस्पष्टता है। संज्ञान युग में, एकता स्वयं ही निवारण बन जाती है, और प्रत्येक नागरिक राष्ट्रीय लचीलेपन में एक हितधारक होता है। युद्धों को अब लड़ने से पहले ही आकार दिया जाता है। यदि लड़ाई हम पर थोपी जाती है, तो जो राष्ट्र अपने डोमेन (कार्यक्षेत्र) को स्पष्टता और एकजुटता के साथ संरेखित रख पाएगा, वह न केवल बल के जरिए बल्कि प्रणालीगत लाभ के माध्यम से प्रतिद्वंद्वी को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर करेगा।

सातवें डोमेन में, जीत पहली गोली चलाने से काफी पहले शुरू हो जाती है और आखिरी गोली थमने के काफी देर बाद तक कायम रहती है।

प्रेरणा

धैर्य, विवेक और करुणा से ही संभव है सच्चा समाज सुधार

समाज परिवर्तन का विचार जितना आकर्षक होता है, उसका मार्ग उतना ही कठिन और धैर्यपूर्ण होता है। इतिहास में अनेक ऐसे महान व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्होंने समाज की बुराइयों को देखा, महसूस किया और उन्हें दूर करने का प्रयास किया, परंतु उनका तरीका विनाश नहीं बल्कि निर्माण का था। ऐसे ही महान समाज सुधारकों में महादेव गोविंद रानाडे का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। उनका जीवन इस सत्य का प्रमाण है कि समाज सुधार केवल विरोध से नहीं, बल्कि समझ, संवेदना और विवेक से संभव होता है। वे मानते थे कि समाज को बदलने के लिए पहले उसके मन को समझना आवश्यक है, क्योंकि बिना समझ के किया गया परिवर्तन स्थायी नहीं होता।

एक बार एक युवक उनके पास आया, जो समाज की कुरीतियों से अत्यंत आक्रोशित था। उसने कहा कि समाज में फैली बुराइयों को समाप्त करने के लिए पुरानी परंपराओं को पूरी तरह नष्ट कर देना चाहिए। उसकी बातों में ऊर्जा और उत्साह था, परंतु उस उत्साह में धैर्य और दूरदृष्टि का अभाव था। रानाडे ने उसकी बातों को शांतिपूर्वक सुना और फिर उससे एक सरल प्रश्न पूछा कि यदि एक घर पुराना और जर्जर हो जाए, तो क्या उसे तुरंत गिराकर बिना तैयारी के खुले में बैठ जाना चाहिए, या पहले एक मजबूत आधार तैयार करके नया घर बनाना चाहिए। युवक इस प्रश्न का उत्तर तुरंत नहीं दे सका, क्योंकि उसने पहली बार समझा कि सुधार का अर्थ केवल तोड़ना नहीं, बल्कि बेहतर विकल्प का निर्माण करना भी है।

रानाडे का यह दृष्टिकोण केवल शब्दों तक सीमित नहीं था, बल्कि उनके पूरे जीवन में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता था। उन्होंने समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों के विरुद्ध कार्य किया, परंतु उनका तरीका हमेशा शांतिपूर्ण और तर्कसंगत था। वे विधवा-विवाह के समर्थक थे, क्योंकि वे समझते थे कि एक स्त्री को केवल सामाजिक परंपराओं के कारण जीवन भर दुख में नहीं रहना चाहिए। उस समय विधवाओं के साथ अत्यंत अन्याय होता था। उन्हें समाज में सम्मान नहीं दिया जाता था, उनकी इच्छाओं और अधिकारों को महत्व नहीं दिया जाता था। रानाडे ने इस अन्याय को समाप्त करने के लिए लोगों को जागरूक किया और उन्हें यह समझाने का प्रयास किया कि मानवता और न्याय किसी भी परंपरा से अधिक महत्वपूर्ण हैं।

वे स्त्री-शिक्षा के भी प्रबल समर्थक थे। उनका विश्वास था कि शिक्षा ही वह शक्ति है, जो व्यक्ति को स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाती है। जब महिलाएं शिक्षित होंगी, तभी समाज का वास्तविक विकास संभव होगा। उस समय बहुत से लोग यह मानते थे कि महिलाओं को शिक्षा की आवश्यकता नहीं है, परंतु रानाडे ने इस सोच को चुनौती दी। उन्होंने लोगों को यह समझाया कि एक शिक्षित महिला केवल स्वयं ही नहीं, बल्कि पूरे परिवार और आने वाली पीढ़ियों को शिक्षित और जागरूक बनाती है।

रानाडे का जीवन हमें यह भी सिखाता है कि समाज सुधार के लिए केवल विचार पर्याप्त नहीं होते, बल्कि उनके लिए निरंतर प्रयास और समर्पण भी आवश्यक होता है। वे प्रार्थना समाज से जुड़े थे, जो सामाजिक और धार्मिक सुधार के लिए कार्य करता था। इस संस्था के माध्यम से उन्होंने समाज में समानता, भाईचारे और शिक्षा के महत्व को बढ़ावा दिया। उन्होंने लोगों को यह समझाया कि धर्म का वास्तविक उद्देश्य मानवता की सेवा करना है, न कि लोगों के बीच भेदभाव उत्पन्न करना। एक न्यायाधीश के रूप में भी उनका जीवन अत्यंत प्रेरणादायक था। उन्होंने अपने पद का उपयोग कभी व्यक्तिगत लाभ या प्रसिद्धि के लिए नहीं किया। उनके लिए न्याय केवल एक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि एक नैतिक कर्तव्य था। उन्होंने हमेशा निष्पक्षता और सत्य का साथ दिया, चाहे परिस्थितियां कितनी भी कठिन क्यों न हों। कई बार उनके व्यक्तिगत विचार और कानून के प्रावधान अलग होते थे, परंतु उन्होंने हमेशा कानून और न्याय की मर्यादा का पालन किया। यह उनके चरित्र की महानता और उनके सिद्धांतों के प्रति उनकी निष्ठा को दर्शाता है। उनका मानना था कि समाज को बदलने के लिए लोगों की सोच को बदलना आवश्यक है, और यह कार्य केवल शिक्षा और संवाद के माध्यम से ही संभव है। उन्होंने कभी भी समाज को अपमानित या दोषी ठहराने का प्रयास नहीं किया, बल्कि उन्होंने लोगों को यह समझाने का प्रयास किया कि परिवर्तन क्यों आवश्यक है। उनका तरीका लोगों को प्रेरित करने का था, न कि उन्हें मजबूर करने का। वे जानते थे कि जब परिवर्तन स्वेच्छा से होता है, तभी वह स्थायी होता है।

उनका जीवन यह संदेश देता है कि समाज सुधार एक लंबी प्रक्रिया है, जिसमें धैर्य, सहनशीलता और निरंतर प्रयास की आवश्यकता होती है। क्रोध और अधीरता से किया गया परिवर्तन अस्थायी होता है, जबकि धैर्य और समझ से किया गया परिवर्तन स्थायी और प्रभावी होता है। उन्होंने कभी भी त्वरित सफलता की इच्छा नहीं की, बल्कि उन्होंने धीरे-धीरे समाज की सोच को बदलने का प्रयास किया।

आज के समय में, जब लोग तुरंत परिणाम चाहते हैं और धैर्य की कमी होती जा रही है, रानाडे का जीवन हमें धैर्य और विवेक का महत्व सिखाता है। उनका जीवन यह बताता है कि सच्चा सुधार वही है, जो समाज को तोड़े नहीं, बल्कि उसे जोड़े। जो लोगों के मन में विश्वास और प्रेरणा उत्पन्न करे, न कि भय और विरोध।

समाज एक जीवित संस्था है, जिसकी अपनी भावनाएं, परंपराएं और मूल्य होते हैं। उसे समझे बिना किया गया परिवर्तन उसे कमजोर बना सकता है। इसलिए आवश्यक है कि हम समाज की अच्छाइयों को बनाए रखें और उसकी बुराइयों को समझदारी और संवेदना के साथ दूर करें। यही सच्चा समाज सुधार है।

महादेव गोविंद रानाडे का जीवन हमें यह सिखाता है कि महानता केवल बड़े कार्य करने में नहीं, बल्कि सही तरीके से कार्य करने में होती है। उन्होंने यह दिखाया कि धैर्य, करुणा और विवेक के साथ किया गया प्रयास ही वास्तविक और स्थायी परिवर्तन ला सकता है। उनका जीवन आज भी हमें प्रेरित करता है कि हम समाज को बेहतर बनाने के लिए सकारात्मक, शांतिपूर्ण और रचनात्मक मार्ग अपनाएं, क्योंकि सच्चा सुधार वही है, जो मानवता, न्याय और प्रेम के आधार पर किया जाए।

125 करोड़ का इनामी माफिया मरा, पूरा देश घुटनों पर ला दिया Trump का क्या रोल था?

गाड़ियां धू-धू कर जल रही हैं। आसमान में धुएं का गुबार है। एयरपोर्ट्स पर भगदड़ मची है। देश के 20 राज्यों में ऐसा कोहराम है। मंजर देख मालूम पड़ता है कि बगावत हो गई हो। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है। यह आग एक खूंखार माफिया के एनकाउंटर के बाद भड़की है। 5 फुट 8 इंच का आदमी, उम्र 59 साल, वजन लगभग 75 किलो। भूरी आंखें, भूरे बाल। आपने फोन पर अगर स्पॉटिफाई खोलकर इस शख्स का नाम सर्च किया तो आपको इस पर कई मैक्सिकन गाने बने मिल जाएंगे। नाम क्या है? नेमेसियो रूबेन, ओसेग्वेरा, सर तेज़। दुनिया इसे एलेंचो के नाम से जानती है। एक पार्टी में एक गुर्गे ने दूसरे पर गलती से गुड़हल की चाय गिरा दी। इतनी सी बात पर छिड़ गया गैंग वॉर और खून खराबे से पैदा हुआ मुर्गों का सरदार। खौफ इतना कि अमेरिका के राष्ट्रपति ने इसके गिरोह को विदेशी आतंकी संगठन घोषित कर रखा है। नौबत यहां तक आ गई थी कि अमेरिका ने उसके देश में अपनी सेना घुसाने और हवाई हमले करने की धमकी दे दी थी। मेक्सिको से लेकर अमेरिका तक ड्रग्स का ऐसा धंधा चलाना जिसमें पुड़िया कम लाशें ज्यादा दिखती थी। दुनिया के सबसे वांटेड ड्रग लीडर्स में से एक यूएस ने जिसके सर पर 125 करोड़ का इनाम रखा था। एलेंचो यह सब अकेले नहीं कर रहा था। उसके पास 5500 से ज्यादा गुर्गे थे जिन्हें मिलिट्री ग्रेड ट्रेनिंग मिली हुई थी। इसके पास वो पनडुब्बियां जिससे कोकेन और बाकी दूसरा नशा यूएस जाता है। नए जमाने के हथियार थे। इस पूरी ताकत के पीछे था उसका ड्रग कार्टिल था। पिछले कुछ सालों में मेक्सिको और अमेरिका दोनों की नाक में दम कर दिया था। पावलो एस्कोबार और एल चाको जैसे ड्रग लॉर्ट्स के बाद एलचो इनकी कुर्सी पर बैठना चाहता था जो बहुत समय से खाली पड़ी थी। लेकिन ट्रंप ने सपना पूरा नहीं होने दिया। मेंचो को गोली लगी। वो घायल हुआ और अस्पताल के रास्ते में उसने दम तोड़ दिया। कैसे अमेरिका की मदद से मेक्सिको ने इस ड्रग माफिया को मारा। ऐकाडो बेचने वाला शख्स कैसे मेक्सिको का सबसे बड़ा ड्रग लॉट बन गया। आज का एमआरआई इसी पर करेंगे। कहते हैं ज्योग्राफी इज डेस्टिनी। भूगोल ही नियति है। मेक्सिको के साथ ऐसा ही है। इसका भूगोल ड्रग्स के कारोबार के लिए परफेक्ट है। जहां अमेरिका की दक्षिणी सीमा खत्म होती है, वहां से शुरू होता है मेक्सिको। इसका दक्षिण पूर्वी हिस्सा पूंछ की तरह समंदर में आगे बढ़ता हुआ ग्वाटरमाला से जुड़ता है। पूंछ आगे बढ़े तो निकारागुआ, कोस्टारिका और पनामा पार करके बसा है वेनेजुएला। वही देश जहां के राष्ट्रपति को उनकी पत्नी सहित उठाकर अमेरिकी फौज ने जेल में डाल दिया था। यह पूरा बेल्ट ड्रग्स के कच्चे माल और उसकी सप्लाई का मेन रूट है। मेक्सिको का उत्तरी बॉर्डर नॉर्दन बाउंड्री अमेरिका से लगती है। अवैध तरीके से अमेरिका में घुसने की चाहत रखने वाले लोग इसी बॉर्डर का इस्तेमाल करते हैं। अमेरिका में पहुंचने वाले ज्यादातर इललीगल ड्रग्स इसी बॉर्डर से सप्लाई होते हैं।

एल मेंचो 17 जुलाई 1966 को एक गरीब परिवार में पैदा हुआ था। परिवार की आय का प्रमुख स्रोत एवोकाडो की खेती था। वह सिर्फ पांवीं क्लास तक पढ़ा था। 14 साल की उम्र से ही मारिजुआना के खेतों की रखवाली करने लगा। 1980 में वह अवैध रूप से अमेरिका चला गया, जहां ड्रग्स से जुड़े मामलों में पकड़ा गया। तीन साल की सजा काटी और फिर डिपोर्ट होकर मेक्सिको लौटा। मैक्सिको लौटने के बाद छोटे शहरों काबो कोरिएंटेस और तोमाट्लान में लोकल पुलिस अधिकारी के रूप में काम किया। इसी दौरान उसने कानून व्यवस्था की कमजोरियों, घूस सिस्टम और सिक्योरिटी ऑपरेशंस के बारे में सब सीखा। जल्द ही नौकरी छोड़कर ड्रग ट्रैफिकिंग में पूरी तरह उतर गया उसकी उम्र 59 साल थी। वह पुलिस अधिकारी भी रह चुका था। 2011 के आसपास अपना गैंग बनाया था। मेक्सिको दुनिया के सबसे बड़े ड्रग तस्करी नेटवर्क का गढ़ माना जाता है।

22 फरवरी को मेक्सिको की सेना ने जेलिस्को राज्य के तपालपा शहर में एक खुफिया ऑपरेशन चलाया। इसमें अमेरिका ने भी खुफिया जानकारी देकर मदद की थी। इंटेलिजेंस में सहायता की। इस एनकाउंटर में एलमेंचो बुरी तरह घायल हुआ। उसे इलाज के लिए हेलीकॉप्टर से मेक्सिको सिटी यानी जो उसकी राजधानी है वहां ले जाया जा रहा था। लेकिन रास्ते में ही उसकी मौत हो गई। कारवाही में उसके गिरोह के नौ गुर्गे भी मारे गए। एल्मेंचो की मौत की खबर बाहर आते ही उसके गुर्गों ने पूरे देश में तांडव शुरू कर दिया।

इस कार्टेल की मौजूदगी पूरे बना रहे थे। मेक्सिको अमेरिका में है। अमेरिका ने एल मैचो पर 136 करोड़ रुपये का इनाम रखा था। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप काफी समय से मेक्सिको पर एल मेचो पर ऐक्शन लेने का दबाव से कोकेन, हेरोइन, मेथ और फेटेनाइल जैसे बेहद खतरनाक ड्रग्स अमेरिका तक पहुंचते हैं। अमेरिकी एजेंसियों के मुताबिक देश में ड्रग्स की सबसे बड़ी सप्लाई मेक्सिकन कार्टेल्स के जरिए होती है। इंटरनेशनल क्राइसिस ग्रुप के मेक्सिको एनालिस्ट डेविड मोरा के मुताबिक, यह कार्रवाई शेनबाम सरकार की कार्टेल के खिलाफ सख्ती और अमेरिका के दबाव दोनों के लिहाज से टर्निंग पॉइंट है। 'एल मैचों' के रिश्तेदार कार्टेल की कमान लेते हैं तो हिंसा जारी रह सकती है। विशेषज्ञ 1990 के दशक में कोलंबिया में कार बम, हत्याएं और विमानों पर हमले जैसा इतिहास दोहराने की आशंका जता रहे।

अभियान

आत्मनिरीक्षण, धैर्य और आंतरिक परिवर्तन की आध्यात्मिक यात्रा

भारतीय सनातन परंपरा में समय को केवल दिनों और तिथियों का क्रम नहीं माना गया है, बल्कि इसे चेतना, ऊर्जा और आत्मिक विकास का माध्यम भी समझा गया है। प्रत्येक पर्व और प्रत्येक विशेष अवधि का एक गहरा आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक महत्व होता है। फाल्गुन मास में आने वाला होलाष्टक ऐसा ही एक महत्वपूर्ण कालखंड है, जो होली से आठ दिन पूर्व प्रारंभ होकर होलिका दहन तक चलता है। यह समय केवल बाहरी दृष्टि से कोई साधारण अवधि नहीं, बल्कि आत्मिक शुद्धि, मानसिक संतुलन और जीवन के गहरे सत्य को समझने का अवसर प्रदान करने वाला काल माना जाता है।

होलाष्टक का अर्थ है—होली से पहले के आठ दिन। लोक परंपराओं और ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार यह समय ऐसा होता है जब वातावरण में एक विशेष प्रकार की उग्रता और अस्थिरता रहती है। यह उग्रता केवल ग्रहों की स्थिति तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह मनुष्य के मन, विचारों और भावनाओं को भी प्रभावित करती है। यही कारण है कि इस अवधि में विवाह, गृह प्रवेश, सगाई, नया व्यापार या किसी भी नए शुभ कार्य की शुरुआत से बचने की परंपरा रही है। इसका उद्देश्य व्यक्ति को रोकना नहीं, बल्कि उसे यह अवसर देना है कि वह अपने निर्णयों को धैर्य और विवेक के साथ ले।

इस परंपरा के पीछे एक गहरा आध्यात्मिक संदेश छिपा हुआ है। जीवन में कई बार हम भावनाओं के प्रभाव में आकर जल्दबाजी में निर्णय ले लेते हैं, जो बाद में हमें परेशानी में डाल सकते हैं। होलाष्टक हमें यह सिखाता है कि जीवन में ठहराव भी आवश्यक है। यह ठहराव हमें अपने भीतर झांकने, अपनी भावनाओं को समझने और अपने विचारों को संतुलित करने का अवसर देता है। जब मन शांत होता है, तभी व्यक्ति सही और संतुलित निर्णय ले सकता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार होलाष्टक का संबंध भक्त प्रह्लाद और उनके पिता हिरण्यकश्यप की कथा से जुड़ा हुआ है। प्रह्लाद भगवान विष्णु के परम भक्त थे, जबकि हिरण्यकश्यप अहंकार और शक्ति के प्रतीक थे। जब प्रह्लाद ने अपने पिता की पूजा करने से इंकार किया, तब उन्हें अनेक कठिन यातनाएं दी गईं। माना जाता है कि ये यातनाएं होली से पहले के आठ दिनों में दी गई थीं। अंततः होलिका दहन के दिन सत्य, भक्ति और विश्वास की विजय हुई। यह कथा हमें यह सिखाती है कि जीवन में कठिनाइयां और परीक्षाएं हमें कमजोर बनाने के लिए नहीं, बल्कि हमें मजबूत और परिपक्व बनाने के लिए आती हैं।

होलाष्टक का वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति को अपने भीतर के अहंकार, क्रोध, ईर्ष्या और नकारात्मकता को पहचानने और उन्हें दूर करने के लिए प्रेरित करना है। यह समय आत्मचिंतन का समय है। यह वह अवसर है जब व्यक्ति अपने जीवन की दिशा पर विचार करता है और यह समझने का प्रयास करता है कि वह सही मार्ग पर चल रहा है या नहीं। यह आत्मनिरीक्षण व्यक्ति को मानसिक शांति और संतुलन प्रदान करता है। धार्मिक दृष्टि से इस अवधि में जप, तप, व्रत, दान और पूजा-पाठ को अत्यंत शुभ माना जाता है। इन सभी कार्यों का उद्देश्य व्यक्ति के मन को शुद्ध करना और उसे आध्यात्मिक रूप से मजबूत बनाना होता है। जब व्यक्ति अपने भीतर की शांति को प्राप्त करता है, तब वह बाहरी परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना संतुलित जीवन जी सकता है। यह समय व्यक्ति को यह सिखाता है कि वास्तविक शक्ति बाहरी संसाधनों में नहीं, बल्कि आंतरिक संतुलन और आत्मविश्वास में होती है।

आधुनिक जीवन में होलाष्टक की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ जाती है। आज का जीवन अत्यंत तेज गति से चल रहा है। हर व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास कर रहा है। इस दौड़ में व्यक्ति कई बार अपने मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को नजरअंदाज कर देता है। लगातार काम, तनाव और डिजिटल दुनिया का प्रभाव व्यक्ति के मन को थका देता है। होलाष्टक इस थकान से राहत पाने का अवसर प्रदान करता है। यह व्यक्ति को यह सिखाता है कि जीवन में संतुलन बनाए रखना कितना आवश्यक है। आज के समय में होलाष्टक को मानसिक विश्राम और आत्मिक पुनर्संतुलन की अवधि के रूप में देखा जा सकता है। यह समय व्यक्ति को डिजिटल दुनिया से कुछ दूरी बनाकर अपने भीतर की शांति को खोजने का अवसर देता है। जब व्यक्ति कुछ समय के लिए बाहरी शोर से दूर होता है, तब वह अपने भीतर की आवाज को सुन सकता है। यह आत्मसंवाद व्यक्ति को स्पष्टता और आत्मविश्वास प्रदान करता है। होलाष्टक का एक और महत्वपूर्ण संदेश यह है कि यह हमें क्षमा और करुणा का महत्व सिखाता है। जीवन में कई बार हम दूसरों के प्रति क्रोध और नकारात्मकता को अपने भीतर संजोए रखते हैं। यह नकारात्मकता हमारे मानसिक संतुलन को प्रभावित करती है। होलाष्टक हमें यह अवसर देता है कि हम अपने पुराने गिले-शिकवे भूल जाएं और अपने मन को नकारात्मक भावनाओं से मुक्त करें। जब हम दूसरों को क्षमा करते हैं, तब वास्तव में हम स्वयं को मुक्त करते हैं।

यह अवधि हमें यह भी सिखाती है कि सच्चा उत्सव बाहरी सजावट और दिखावे में नहीं, बल्कि आंतरिक शांति और संतुलन में होता है। होली केवल रंगों का पर्व नहीं है, बल्कि यह अहंकार और नकारात्मकता को समाप्त करने का प्रतीक है। होलाष्टक इस उत्सव की तैयारी का समय है। यह वह समय है जब व्यक्ति अपने मन को शुद्ध करता है और अपने भीतर सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है।

होलाष्टक हमें यह समझने का अवसर देता है कि जीवन में हर उत्सव से पहले आत्मिक तैयारी आवश्यक है। जैसे हम अपने घर की सफाई करते हैं, वैसे ही हमें अपने मन और विचारों की भी सफाई करनी चाहिए। यह मानसिक और भावनात्मक सफाई व्यक्ति को वास्तविक आनंद का अनुभव करने के योग्य बनाती है।

आज के आधुनिक युग में, जब जीवन में तनाव, प्रतिस्पर्धा और अस्थिरता बढ़ती जा रही है, होलाष्टक का संदेश अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। यह हमें यह सिखाता है कि जीवन में सफलता केवल बाहरी उपलब्धियों से नहीं, बल्कि आंतरिक शांति और संतुलन से प्राप्त होती है। यह अवधि हमें यह अवसर देती है कि हम अपने जीवन को नए दृष्टिकोण से देखें और अपने भीतर छिपी सकारात्मक ऊर्जा को पहचानें।

अंततः, होलाष्टक केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं है, बल्कि यह आत्मिक जागरण और मानसिक संतुलन की यात्रा है। यह हमें यह सिखाता है कि सच्चा परिवर्तन बाहरी परिस्थितियों को बदलने से नहीं, बल्कि अपने भीतर के दृष्टिकोण को बदलने से आता है। जब हम अपने भीतर की नकारात्मकता को समाप्त कर देते हैं और अपने मन को शुद्ध कर लेते हैं, तभी हम जीवन के वास्तविक आनंद और शांति का अनुभव कर सकते हैं। यही होलाष्टक का वास्तविक संदेश है—रुकना, सोचना, समझना और अपने भीतर के प्रकाश को पहचानना।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

2027 की जनगणना सटीकता, पारदर्शिता और डिजिटल गवर्नेंस में बेंचमार्क स्थापित करेगी : मुख्य सचिव श्री एम. के. दास

▸▸ भारत की जनगणना-2027 के प्रथम चरण के लिए गांधीनगर में गुजरात में प्रिंसिपल सेंसस ऑफिसर्स की विशेष बैठक आयोजित हुई

▸▸ राज्य में जनगणना-2027 का द्वि-चरणीय आयोजन : पहले चरण में घर-आवास की जानकारी और दूसरे चरण में जनगणना प्रक्रिया संचालित की जाएगी

जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्य सचिव श्री एम.के. दास की अध्यक्षता में मंगलवार को गांधीनगर में भारत सरकार के महानिबंधक और जनगणना आयुक्त कार्यालय द्वारा आयोजित जनगणना-2027 के प्रथम चरण की तैयारियों के अंतर्गत गुजरात, दादरा और नगर हवेली तथा दमन और दीव के प्रिंसिपल सेंसस ऑफिसर्स की विशेष बैठक आयोजित की गई।

मुख्य सचिव श्री एम.के. दास ने बताया कि जनगणना-2027 सटीकता, पारदर्शिता और डिजिटल गवर्नेंस में बेंचमार्क स्थापित करेगी। भारत की जनगणना देश का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण प्रशासनिक कार्यक्रम है। वर्ष 2027 की जनगणना अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रत्येक नीति-निर्णय के लिए ये आंकड़े हमारे राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक बनेंगे। राज्य के शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है, इसलिए आगामी विकासोन्मुखी कार्यों में ये आंकड़े आधारभूत सिद्ध होंगे। पहले इस प्रक्रिया में 3 से 4 वर्ष लगते थे, लेकिन डिजिटल टूल्स के उपयोग से इस प्रक्रिया को गति मिलेगी।

श्री एम.के. दास ने आगे कहा कि जनगणना-2027 केवल एक वैधानिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि वह आधार है जिस पर राष्ट्र के भविष्य की योजना, जनहितोन्मुखी योजनाओं के लक्ष्य तथा विकास की रणनीतियां निर्भर रहेंगी। इसमें राज्य के प्रत्येक जिले तथा शहरी स्तर पर जिम्मेदारी के साथ सूक्ष्म योजना बनाना आवश्यक है। उन्होंने जोड़ा कि राज्य सरकार सर्वोच्च प्रशासनिक तैयारी के साथ जनगणना-2027 को सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए प्रतिबद्ध है।

भारत के महानिबंधक और जनगणना आयुक्त श्री मृत्युंजय कुमार नारायण ने बताया कि भारत में पहली समकालीन जनगणना वर्ष 1881 में आयोजित की गई थी और उसके बाद वर्ष 2011 तक प्रत्येक दस वर्ष में जनगणना लगातार होती रही है। उन्होंने जनगणना की रणनीति, रोडमैप, कार्यप्रणाली और डिजिटल पहलुओं पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि जनगणना की सफलता जिला कलेक्टरों और महानगर पालिका आयुक्तों के सक्रिय नेतृत्व, समर्थन और निरंतर निगरानी पर निर्भर करती है। इसलिए उन्होंने सभी अधिकारियों को इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का निर्देश दिया।

राजस्व विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ. जयंती रवि ने बताया कि इस बार महानिबंधक के कार्यालय द्वारा पूरे देश के लिए कई नई पहलें की गई हैं। टेक्नोलॉजी का व्यापक उपयोग करके जनगणना का कार्य किया जाएगा, जो वास्तविक समय में पारदर्शिता लाएगी और डेटा का विभिन्न तरीकों से विश्लेषण आसान बनेगा। उन्होंने कहा कि पहली बार मकान सूचीकरण चरण में भी डिजिटल स्व-गणना की सुविधा प्रस्तुत की जाएगी, जिसमें नागरिकों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित कर उन्हें इस कार्य का महत्वपूर्ण भागीदार बनाने का प्रयास किया जाएगा।

गुजरात के जनगणना निदेशक श्री सुजल मायात्रा ने बताया कि जनगणना की प्रक्रिया विश्व की सबसे बड़ी और जटिल प्रशासनिक प्रक्रियाओं में से एक है, जो भारत की संस्थागत मजबूती को दर्शाती है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक दस वर्ष में देश की जनसंख्या के सांख्यिकीय आंकड़ों की गणना की जाती है, जो संसाधनों के वितरण, शहरी नियोजन, कल्याणकारी योजनाओं और लक्षित हस्तक्षेपों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने जोड़ा कि आगामी 2027 की जनगणना विशेष इसलिए है क्योंकि यह डेटा-आधारित और टेक्नोलॉजी-सुसज्जित शासन के युग में हो रही है।

इस बैठक में सामान्य प्रशासन विभाग की सचिव श्री आर्द्रा अग्रवाल ने कार्यक्रम की तैयारियों के संबंध में विस्तृत जानकारी दी।

इसके अलावा, बैठक में गुजरात के जनगणना निदेशक कार्यालय द्वारा विभिन्न प्रशासनिक और तकनीकी पहलुओं पर विस्तृत प्रस्तुति के साथ विशेष चर्चा की गई। इसमें एचएलओ फेज -I के अंतर्गत राज्य में मकानों, आवासीय इकाइयों और घरों की विस्तृत सूची तैयार करने की योजना, प्रशिक्षण, कर्मचारियों की नियुक्ति तथा डिजिटल स्व-गणना (Self-Enumeration) की सुविधा जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

उल्लेखनीय है कि 2027 की जनगणना दो चरणों में आयोजित होगी, जिसमें पहले चरण में घर सूचीकरण और आवास जनगणना (House Listing & Housing Census) होगी, जबकि दूसरे चरण में जनसंख्या गणना (Population Enumeration) की जाएगी। गुजरात में एचएलओ की प्रक्रिया आगामी अप्रैल-मई 2026 के दौरान शुरू होगी, जिसमें नागरिकों को ऑनलाइन स्वयं जानकारी भरने की सुविधा भी उपलब्ध रहेगी।

इस बैठक में शहरी विकास और आवास विभाग के प्रधान सचिव श्री एम. थेन्नारसन, पंचायत विभाग के प्रधान सचिव श्री धनंजय द्विवेदी, जिला कलेक्टर तथा महानगर पालिका आयुक्त उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय कैबिनेट ने गिफ्ट सिटी से शाहपुर तक के मेट्रो रेल नॉर्थ-साउथ कॉरिडोर के विस्तार को मंजूरी दी

▸▸ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अहमदाबाद और गिफ्ट सिटी के बीच कनेक्टिविटी को और मजबूत करने वाले इस निर्णय के लिए प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त किया

▸▸ 3.33 किमी लंबे विस्तार के साथ तीन एलिवेटेड स्टेशन शुरू होंगे

▸▸ अगले चार वर्षों में इस रूट को पूरा करने का आयोजन

▸▸ गिफ्ट सिटी के साथ इस कनेक्टिविटी से शैक्षणिक संस्थानों, व्यापारिक केंद्रों, बहुराष्ट्रीय कंपनियों और अहमदाबाद एवं गिफ्ट सिटी के बीच यात्रा करने वाले दैनिक यात्रियों को होगा सीधा लाभ

जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में मंगलवार को नई दिल्ली में हुई केंद्रीय कैबिनेट की बैठक में गिफ्ट सिटी की कनेक्टिविटी को और भी सुगम बनाने का महत्वपूर्ण निर्णय करते हुए गुजरात मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (जीएमआरसी) के गिफ्ट सिटी से शाहपुर तक के मौजूदा नॉर्थ-साउथ कॉरिडोर के विस्तार को मंजूरी दी गई है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन से स्थापित और दुनिया भर में फिनटेक हब के रूप में ख्याति प्राप्त कर रहे गुजरात इंटरनेशन फाइनेंस टेक-सिटी (गिफ्ट सिटी) में बहुराष्ट्रीय फिनटेक कंपनियों सहित गिफ्ट सिटी में संचालित इकाइयों, शैक्षणिक संस्थानों और व्यापारिक केंद्रों के साथ ही अहमदाबाद और गिफ्ट सिटी के बीच यात्रा करने वाले दैनिक यात्रियों को इस कनेक्टिविटी का लाभ देने के लिए प्रधानमंत्री सहित केंद्रीय कैबिनेट का आभार व्यक्त किया है।

वर्तमान स्थिति में गुजरात मेट्रो के 68.28 किमी लंबे अहमदाबाद मेट्रो के फेज-1 (एपीएमसी से मोटेरा स्टेडियम (नॉर्थ-साउथ कॉरिडोर) और थलतेज गांव से वस्त्राल गांव (ईस्ट-वेस्ट कॉरिडोर) और फेज-2 (मोटेरा स्टेडियम से महात्मा मंदिर और जीएनएलयू से गिफ्ट सिटी) कुल 53 स्टेशनों के साथ सितंबर-2022 (फेज-1) और जनवरी-2026 (फेज-2) से सफलतापूर्वक कार्यरत किए गए हैं, जिसका लाभ रोजाना लगभग 1.60 लाख लोगों को आसान आवाजाही के लिए मिल रहा है।

अब, केंद्रीय कैबिनेट ने गिफ्ट सिटी से शाहपुर तक के 3.33 किलोमीटर लंबे विस्तार को मंजूरी दी है, जिसमें तीन एलिवेटेड स्टेशन शामिल हैं। 1067.35 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत की इस परियोजना को लगभग चार वर्षों पूरा करने का आयोजन है।

पश्चिम रेलवे चलाएगी होली के अवसर पर दो जोड़ी स्पेशल ट्रेनें

जीएनएस)। यात्रियों की सुविधा तथा होली पर्व के दौरान बढ़ी हुई यात्रा मांग को ध्यान में रखते हुए, पश्चिम रेलवे दादर – नई दिल्ली एवं वलसाड – मऊ के बीच विशेष किराये पर दो जोड़ी स्पेशल ट्रेनें चलाएगा। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ट्रेन का विवरण निम्नानुसार है:

1. ट्रेन संख्या 04001/04002 दादर – नई दिल्ली सुपरफास्ट स्पेशल (04 फेरे)

ट्रेन संख्या 04001 दादर – नई दिल्ली स्पेशल हर शुक्रवार को 00:05 बजे दादर से प्रस्थान कर उसी दिन 21:05 बजे नई दिल्ली पहुंचेगी। यह ट्रेन 27 फरवरी, 2026 एवं 06 मार्च, 2026 को चलेगी।

इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 04002 नई दिल्ली – दादर स्पेशल हर बुधवार को 22:40 बजे नई दिल्ली से प्रस्थान कर अगले दिन 22:40 बजे दादर पहुंचेगी। यह ट्रेन 25 फरवरी, 2026 एवं 04 मार्च, 2026 को चलेगी।

मार्ग में यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, सूरत, वडोदरा, रतलाम, कोटा, गंगापुर सिटी, मथुरा एवं कोसी कलां स्टेशनों पर ठहरेगी।

इस ट्रेन में एसी 2-टियर एवं एसी 3-टियर के कोच होंगे।

2. ट्रेन संख्या 05018/05017 वलसाड – मऊ स्पेशल (04 फेरे)

ट्रेन संख्या 05018 वलसाड – मऊ स्पेशल हर रविवार को 15:10 बजे वलसाड से प्रस्थान कर मंगलवार को 00:45 बजे मऊ पहुंचेगी। यह ट्रेन 01 मार्च एवं 08 मार्च, 2026 को चलेगी।

इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 05017 मऊ – वलसाड स्पेशल हर शनिवार को 03:45 बजे मऊ से प्रस्थान कर अगले दिन 12:35 बजे वलसाड पहुंचेगी। यह ट्रेन 28 फरवरी एवं 07 मार्च, 2026 को चलेगी।

मार्ग में यह ट्रेन दोनों दिशाओं में सूरत, वडोदरा, रतलाम, नागदा, भवानी मंडी, रामगंज मंडी, कोटा, गंगापुर सिटी, बयाना, ईदगाह आगरा, टूण्डला, कानपुर सेंट्रल, ऐशबाग, बादशाह नगर, बाराबंकी, गोंडा, बस्ती, गोरखपुर, देवरिया सदर, भटनी, सलेमपुर एवं बेलथरा रोड स्टेशनों पर ठहरेगी।

"फाल्गुन फेरी" के उपलक्ष्य में 01 मार्च को पालीताना से बान्द्रा के लिए चलेगी एक और स्पेशल ट्रेन, टिकट बुकिंग 25 फरवरी से शुरू होगी

जीएनएस)। यात्रियों की सुविधा तथा "फाल्गुन फेरी" के अवसर पर पालीताना जैन मंदिर में होने वाली क्षद्धालुओं की अतिरिक्त भीड़ को ध्यान में रखते हुए पश्चिम रेलवे द्वारा विशेष किराये पर पालीताना और बान्द्रा टर्मिनस के बीच एक और सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार ट्रेन का विवरण निम्नानुसार है:

ट्रेन संचालन विवरण:

बान्द्रा टर्मिनस से पालीताना के लिए चलने वाली बान्द्रा-पालीताना सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन (09013) दिनांक 28 फरवरी, 2026 (शनिवार) को बान्द्रा टर्मिनस से सुबह 11.00 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 00.50 बजे पालीताना पहुंचेगी।

इसी प्रकार वापसी में पालीताना-बान्द्रा सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन (09014) दिनांक 01 मार्च, 2026 (रविवार) को पालीताना से दोपहर 15.00 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन प्रातः 05.00 बजे बान्द्रा टर्मिनस पहुंचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में सिहोर (गुजरात), सोनगढ़, धोला, बोटाद, अहमदाबाद, वडोदरा, सूरत, वापी एवं बोरीवली स्टेशनों पर ठहराव करेगी। ट्रेन में यात्रियों की सुविधा के लिए सेकंड एसी, थर्ड एसी, स्लीपर क्लास एवं जनरल सेकेंड क्लास के कोच उपलब्ध रहेंगे।

बुकिंग संबंधी जानकारी :

ट्रेन संख्या 09013 एवं 09014 की बुकिंग दिनांक 25 फरवरी, 20206 (बुधवार) से सभी यात्री आरक्षण केन्द्रों तथा आईआरसीटीसी की आधिकारिक वेबसाइट पर शूरू होगी। यात्री ट्रेन के परिचालन समय, ठहराव एवं संरचना से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए भारतीय रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का जनजातीय क्षेत्र नर्मदा जिले में रोड कनेक्टिविटी को अधिक सुदृढ़ करने का महत्वपूर्ण निर्णय

मुख्यमंत्री ने 11 गांवों के 18 हजार से अधिक लोगों को जिला एवं तहसील मुख्यालय तक आगागमन की सुविधा प्रदान करने के लिए नर्मदा जिले में 2 नए पुलों के लिए 302.40 करोड़ रुपए स्वीकृत किए

जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने जनजातीय क्षेत्र नर्मदा जिले के 11 गांवों के 18 हजार से अधिक लोगों को जिला और तहसील मुख्यालय तक आवागमन के लिए आसान कनेक्टिविटी प्रदान करने का एक महत्वपूर्ण निर्णय किया है।

मुख्यमंत्री ने इस उद्देश्य से नर्मदा जिले में 2 नए पुलों के निर्माण के लिए 302.40 करोड़ रुपए के कार्यों को स्वीकृति दी है। तदनुसार, नर्मदा जिले के रेंगण घाट से रामपुरा घाट पर पुल निर्माण के लिए 123.13 करोड़ रुपए और शहेराव घाट से तिलकवाड़ा घाट को जोड़ने वाले पुल के लिए 179.27 करोड़ रुपए मंजूर किए हैं।

जनजातीय क्षेत्र नर्मदा जिले में इन दो पुलों के निर्माण से उत्तर और दक्षिण क्षेत्र के तिलकवाड़ा, वासण, रेंगण, रामपुरा, मांगरोल और शहेराव सहित

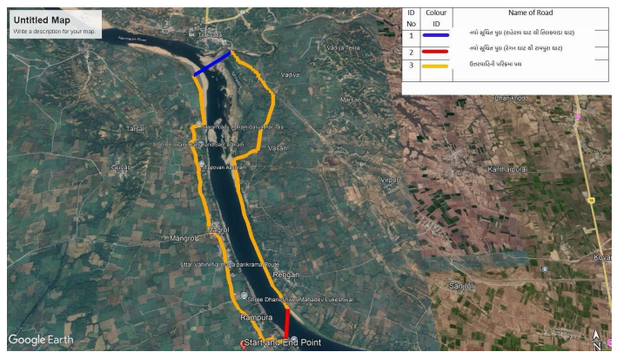

अन्य गांवों में रहने वाले ग्रामीणों के लिए भी आवागमन सुगम हो जाएगा तथा इन क्षेत्रों से स्कूल-कॉलेज में पढ़ाई के लिए जाने वाले छात्रों को मानसून के दिनों में भी आने-जाने के लिए बेहतर सड़क की सुविधा उपलब्ध होगी।

इतना ही नहीं, नांदोद और तिलकवाड़ा तहसील में हर साल चैत्र महीने के दौरान आयोजित होने वाली उत्तरवाहिनी परिक्रमा में आने वाले परिक्रमा यात्रियों को भविष्य में इन दोनों पुलों का लाभ मिलने से कुल 17 किलोमीटर की दूरी कम होगी, साथ ही समय और ईंधन की भी बचत होगी।

वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच भारत की अर्थव्यवस्था ने दिखाई मजबूती, 8.1 प्रतिशत जीडीपी वृद्धि का अनुमान बना विकास की नई आशा

जीएनएस)। विश्व अर्थव्यवस्था इस समय एक ऐसे दौर से गुजर रही है, जहां हर देश को अस्थिरता, व्यापारिक तनाव और तकनीकी बदलावों की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे समय में भारत की अर्थव्यवस्था का मजबूती से आगे बढ़ना न केवल देश के लिए बल्कि पूरे विश्व के लिए एक सकारात्मक संकेत बनकर उभरा है। हाल ही में जारी अनुमान के अनुसार चालू वित्त वर्ष 2026-27 की अक्टूबर से दिसंबर तिमाही में भारत की जीडीपी वृद्धि दर 8.1 प्रतिशत तक पहुंच सकती है। यह अनुमान ऐसे समय में आया है, जब वैश्विक स्तर पर कई विकसित अर्थव्यवस्थाएं धीमी वृद्धि, महंगाई और व्यापारिक बाधाओं से जूझ रही हैं। इस अनुमान को जारी करने वाली संस्था भारतीय स्टेट बैंक की रिपोर्ट ने यह संकेत दिया है कि भारत की आर्थिक संरचना अब पहले से अधिक मजबूत और विविध हो चुकी है। यह केवल एक सांख्यिकीय आंकड़ा नहीं है, बल्कि यह उस व्यापक आर्थिक परिवर्तन का प्रतीक है, जो पिछले एक दशक में देश में हुआ है। भारत अब केवल कृषि या पारंपरिक उद्योगों पर निर्भर अर्थव्यवस्था नहीं रहा, बल्कि सेवा क्षेत्र, डिजिटल कॉमर्स, विनिर्माण और तकनीकी नवाचार के सहारे एक संतुलित और आधुनिक आर्थिक शक्ति बन चुका है। भारत की आर्थिक मजबूती का सबसे बड़ा आधार इसकी घरेलू मांग है। देश की विशाल जनसंख्या, बढ़ता मध्यम वर्ग और तेजी से फैलता शहरीकरण उपभोग को निरंतर बढ़ा रहा है। लोग अब केवल आवश्यक वस्तुओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे बेहतर जीवनशैली, आधुनिक तकनीक और नई सेवाओं की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं।

पश्चिम रेलवे – रतलाम मंडल

कोचिंग डिपो इंदौर : ई–निविदा सूचना

संख्या : E-IND-WLI-2026-A, **दिनांक** : 21.02.2026.

भारत के राष्ट्रपति की ओर से तथा उनके लिए वरि. कोचिंग डिपो अधिकारी इंदौर पश्चिम रेलवे, रतलाम द्वारा निम्नलिखित कार्य/कार्यों के लिए खुली ई–निविदा निविदा संख्या : E-IND-WLI-2026-A के विरूद्ध अंतिम तिथि 19/03/2026 15:00 बजे तक) (एकल पैकेट सिस्टम) आमंत्रित की जाती है। बिडर केवल अंतिम तिथि एवं समय तक ही अपनी बिड जमा कर सकेंगे। इस निविदा के विरूद्ध मैन्युअल ऑफर की अनुमति नहीं है, और प्राप्त ऐसे किसी भी मैन्युअल ऑफ़र को अनदेखा कर दिया जाएगा।

यदि किसी कारण–वश निविदा खुलने की नियत दिनांक को अवकाश घोषित किया जाता है तो संबंधित निविदायें अवकाश के अगले कार्य दिवस में नियत समय पर खोली जायेगी।

कार्य का नाम एवं स्थान : **कार्य का नाम** – अंडरस्लंग और ओवरहेड वॉटर टैंक वाले कोचों के लिए जल स्तर संकेतक की व्यवस्था। **स्थान** : कोचिंग डिपो–इंदौर, **कार्य की अनुमानित लागत** : ₹ 2,29,60,000/- (सभी कर, ड्यूटीज, एवं जी.एस.टी. सहित), **बयाना राशि** : ₹ 2,64,800/-, **समापन अवधि** : एल.ओ.ए. जारी होने की तारीख से 12 माह, **कार्यालय का पता जहां निविदा खुलेगी** : कार्यालय – वरि.कोचिंग डिपो अधिकारी इंदौर, **निविदा फार्म जमा करने का अंतिम तिथि एवं समय** : 15:00 बजे दिनांक 19/03/2026 तक जमा करने का समय, **वेबसाईट व नोटिस बोर्ड जहां निविदा संबंधी सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सकती है** : निविदाऐं IREPS वेबसाईट पर देखी जा सकती है साथ ही इस संबंध में कोई भी जानकारी वरि. कोचिंग डिपो अधिकारी इंदौर, कार्यालय (प.रे.) से सभी कार्यालयीन दिवस पर प्राप्त की जा सकती है।

ADM/3/1/478

Follow us on: twitter.com/WesternRly

सतर्कता एवं त्वरित कार्रवाई से टली संभावित रेल दुर्घटनाएँ भावनगर मंडल के तीन कर्मचारियों को पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक द्वारा 'मैन ऑफ द मंथ' संरक्षा पुरस्कार से सम्मानित

जीएनएस)। रेल संरक्षा के प्रति उत्कृष्ट सतर्कता, कर्तव्यनिष्ठा एवं त्वरित निर्णय क्षमता का परिचय देते हुए भावनगर मंडल के कर्मचारियों द्वारा संभावित रेल दुर्घटनाओं को समय रहते टालते हुए सुरक्षित रेल संचालन सुनिश्चित किया गया। कर्मचारियों के इस सराहनीय एवं अनुकरणीय योगदान के लिए पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक (प्रभारी) श्री प्रदीप कुमार द्वारा मुंबई स्थित पश्चिम रेलवे मुख्यालय में आयोजित समारोह में भावनगर मंडल के तीन कर्मचारियों को "मैन ऑफ द मंथ" (जनवरी–2026) संरक्षा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 23 फरवरी, 2026 को मुंबई स्थित पश्चिम रेलवे मुख्यालय में आयोजित किया गया था।

सम्मानित कर्मचारियों में श्री मो. तैयब (ट्रैक मेंटेनर–IV, धोला जंक्शन), श्री केतन एम. डेर (वरिष्ठ गाड़ी प्रबंधक, जेतलसर जंक्शन) तथा श्री रविंद्र कुमार (ट्रैक मेंटेनर–IV, लोलिया) शामिल हैं, जिन्होंने अपनी सजगता एवं जिम्मेदारीपूर्ण कार्यप्रणाली से रेल परिचालन की संरक्षा सुनिश्चित करने में उल्लेखनीय योगदान दिया।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार जनवरी–2026 माह के लिए सम्पूर्ण पश्चिम रेलवे क्षेत्र से कुल 12 रेल कर्मचारियों का चयन इस प्रतिष्ठित संरक्षा सम्मान हेतु किया गया, जिनमें भावनगर मंडल के तीन कर्मचारियों को उनकी असाधारण सतर्कता एवं उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए पुरस्कृत किया गया। इन कर्मचारियों की सजगता से ब्रेक बाइंडिंग, ट्रैक दोष तथा रेल फ्रैक्चर जैसी संभावित गंभीर संरक्षा संबंधी घटनाओं को समय रहते रोका जा सका, जिससे रेल परिचालन सुरक्षित एवं निर्बाध बना रहा।

दिनांक 29 जनवरी, 2026 को श्री मो. तैयब द्वारा गाड़ी संख्या 09208 भावनगर टर्मिनस–बान्द्रा टर्मिनस एक्सप्रेस के निरीक्षण के दौरान गेट संख्या 176/सी के समीप कोच के पहियों से धुआँ निकलता हुआ देखा गया। उन्होंने तत्काल स्टेशन मास्टर को सूचना देकर ट्रेन को रुकवाया। जांच के दौरान 'ब्रेक बाइंडिंग' की पुष्टि हुई, जिसे समय रहते दूर कर संभावित दुर्घटना को टाल दिया गया।

इसी प्रकार दिनांक 5 जनवरी, 2026 को श्री केतन एम. डेर द्वारा वंदे भारत एक्सप्रेस (गाड़ी संख्या 26901) में यात्रा के दौरान शापुर–लुशाला रेल खंड के मध्य असामान्य झटका महसूस होने पर तत्काल सूचना दी गई। जांच में एसडब्ल्यूआर सेक्शन में 'लो जॉइंट' पाया गया, जिसके पश्चात गति सीमा 75 किमी/घंटा से घटाकर 45 किमी/घंटा निर्धारित की गई तथा सुरक्षित रेल संचालन सुनिश्चित किया गया।

दिनांक 3 जनवरी, 2026 को प्रातःकालीन ट्रैक गश्त के दौरान श्री रविंद्र कुमार द्वारा किलोमीटर 100/4-5 के मध्य रेल फ्रैक्चर का पता लगाया गया। उन्होंने तत्काल आपातकालीन जॉइंट प्लेट लगाकर ट्रैक की अस्थायी मरम्मत की तथा ट्रेनों को नियंत्रित गति से सुरक्षित पार कराया, जिससे संभावित दुर्घटना टल गई।

भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने सम्मानित कर्मचारियों की तत्परता, सतर्कता एवं समर्पण की सराहना करते हुए कहा कि रेल संरक्षा प्रत्येक रेलकर्मी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इस प्रकार की घटनाएँ कर्मचारियों की पेशेवर दक्षता एवं संरक्षा संस्कृति के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि ऐसे सम्मान, कर्मचारियों को भविष्य में भी उत्कृष्ट सेवा एवं सतर्क कार्यप्रणाली के लिए प्रेरित करते रहेंगे तथा भारतीय रेल की संरक्षा व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ बनाएंगे।

न्यायपालिका में बढ़ती शिकायतें और विश्वास का संकट

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। हमारा भारत, विश्व का सबसे बड़ा देश, चीन के बाद दूसरे स्थान पर आता है। हमारा देश सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। और इस लोकतंत्र के मूलभूत स्तंभों में से एक न्यायपालिका है, जिस पर देश के सभी नागरिकों का अटूट विश्वास है। निर्वाचित सदस्यों से लेकर प्रशासन तक, इन स्तंभों ने देश की जनता का विश्वास खो दिया है। क्योंकि ये भ्रष्टाचार से ग्रसित हो चुके हैं।

शून्य त्रुटि विज्ञापन

देश का मीडिया भी अपने भ्रष्ट आचरण के कारण जनता का विश्वास खो चुका है। ऐसे में न्यायपालिका ही एकमात्र ऐसा स्तंभ है जिस पर अधिकांश नागरिकों का पूर्ण विश्वास है, लेकिन अब इस सम्मानित न्यायपालिका के बारे में आ रही खबरें चौंकाने वाली हैं। भारत में न्यायपालिका को न्याय का मंदिर माना जाता है, जहां विवादों का समाधान होता है और नागरिकों के अधिकारों की रक्षा की जाती है। किसी भी कठिन या जटिल परिस्थिति में न्यायपालिका ही नागरिकों का अंतिम सहारा होती है। लेकिन यदि न्यायिक अधिकारियों के कामकाज पर सवाल उठते हैं, तो

न्याय की उम्मीद पर लोगों का भरोसा कहाँ टिकेगा?

यह चिंता सरकारी आंकड़ों से उपजी है, जिनसे पता चलता है कि भारत के मुख्य न्यायाधीश के कार्यालय को 2016 से अब तक मौजूदा न्यायाधीशों के खिलाफ 8,600 से अधिक शिकायतें प्राप्त हुई हैं। सरकार ने स्वयं लोकसभा में बताया कि न्यायाधीशों सहित न्यायिक अधिकारियों के खिलाफ सबसे अधिक शिकायतें 2024 में दर्ज की गईं। इससे पता चलता है कि यह प्रवृत्ति समय के साथ बढ़ रही है। पिछले दशक में प्राप्त तदर्थ शिकायतें निश्चित रूप से गंभीर चिंता का विषय हैं, क्योंकि एक सच्चे लोकतंत्र में न्यायपालिका से निष्पक्षता, पारदर्शिता, ईमानदारी और समर्पण के साथ कार्य करने की अपेक्षा की जाती है। नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करना न्यायपालिका की सर्वोच्च प्राथमिकता है। और इसीलिए यह जनता के लिए साहस और विश्वास का स्रोत है।

पिछले साल मार्च में दिल्ली के एक जज के आवास से मिले जले हुए नोटों के बंडलों के मामले में जांच में कोई खास प्रगति न होने पर अभी भी सवाल उठ रहे हैं। माना जाता है कि अगर इस मामले में कोई प्रशासनिक अधिकारी या आम नागरिक शामिल होता, तो जांच प्रक्रिया अब तक काफी आगे बढ़ चुकी होती। ऐसी स्थिति में एक अहम कारक उच्च न्यायालयों के जजों की भागीदारी वाली जांच और अभियोजन प्रक्रिया की जटिल संरचना है।

पश्चिम रेलवे द्वारा बांद्रा टर्मिनस ⇌ पालिताना के बीच सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन चलाई जाएगी

ट्रेन क्र.	प्रस्थान स्टेशन और गंतव्य	सेवा की तिथी	प्रस्थान	आगमन
09013	बांद्रा टर्मिनस - पालिताना	28.02.2026	11:00 बजे (शनिवार)	00:50 बजे (दुसरे दिन)
09014	पालिताना - बांद्रा टर्मिनस	01.03.2026	15:00 बजे (रविवार)	05:00 बजे (दुसरे दिन)

होल्ट: बोरीवली, वापी, सूरत, वडोदरा, अहमदाबाद, बोटाद, धोला, सोनगढ़ और सीहोर गुजरात स्टेशन दोनों दिशाओं में।

कम्पोज़िशन: AC 2-टियर, AC 3-टियर, स्लीपर क्लास और जनरल सेकंड क्लास कोच।

समय, ठहराव और संरचना के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए, यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जा सकते हैं।

ट्रेन नंबर 09013 और 09014 के लिए बुकिंग ता. 25.02.2026 से सभी PRS काउंटर और IRCTC वेबसाइट पर शुरू होगी। ऊपर बताई गई ट्रेन स्पेशल ट्रेन के तौर पर स्पेशल किराए पर चलाई जाएगी।

पश्चिम रेलवे
wr.indianrailways.gov.in
हमें लाइक और फॉलो करें:
facebook.com/WesternRly
X.com/WesternRly
Instagram.com/WesternRly
https://www.youtube.com/@WesternRly
https://bit.ly/WesternRailwayOfficial

कृपया सभी आरक्षित टिकटों के लिए मूल पहचान पत्र साथ रखें

कडोदरा पुलिस के खिलाफ पक्षपात के आरोप, 30 लाख मामलों में एफएसएल रिपोर्ट पर विवाद

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। शिकायतकर्ता अशोककुमार मुन्नालाल साहू ने 9 जनवरी 2024 को सूरत के कडोदरा पुलिस स्टेशन में आरोपी दीपक जगदीश प्रसाद अग्रवाल, श्रीमती मिनुबेन राजेशभाई जोशी और राजेशभाई जोशी के खिलाफ लिखित शिकायत दर्ज कराई थी। दो साल बीत जाने के बावजूद एफएसएल रिपोर्ट न मिलने से उन्हें मानसिक आघात पहुंचा है। साथ ही, यह स्पष्ट रूप से देखा जा रहा है कि कडोदरा पुलिस आरोपियों को परोक्ष रूप से बचाने की कोशिश कर रही है। फिर भी, यह समझ से परे है कि पुलिस को गुस्सा क्यों नहीं आ रहा है। एक ओर शिकायतकर्ता ने आरोपियों को पूरे 30,00,000 रुपये दिए, और आरोपी राजेश जोशी ने पैसे लेने के बारे में अपनी डायरी पर हस्ताक्षर किए। सीसीटीवी फुटेज और पैसे लेने के फोटो सबूत होने के बावजूद, कडोदरा पुलिस दो साल की जांच के बाद भी एफएसएल रिपोर्ट न मिलने का बहाना बनाकर माननीय उच्च न्यायालय को गुमराह कर रही है और समय बर्बाद कर रही है।

शून्य त्रुटि विज्ञापन

शिकायतकर्ता ने दिनांक 31/05/2012 के दस्तावेज़ संख्या 2842 और दिनांक 31/05/2012 के दस्तावेज़ संख्या 2843 की फोटोकॉपी देखने के बाद तीनों आरोपियों से 55,00,000/- रुपये (पचपन लाख रुपये) लेने का निर्णय लिया और तीसरे आरोपी राजेश जोशी को 30,00,000/- रुपये (तीस लाख रुपये) नकद दिए। प्राप्त धन की रसीद शिकायतकर्ता को उसके हस्ताक्षर वाली डायरी के रूप में दी गई थी, आरोपियों द्वारा धन लेते हुए सीसीटीवी फुटेज का फोटो सबूत भी मौजूद है, और दस्तावेज़ तैयार करने के बाद, आरोपियों ने शेष 25,00,000/- रुपये (पच्चीस लाख रुपये) देने का वादा किया था।

अब जब शिकायतकर्ता अशोक कुमार साहू ने बार-बार आरोपियों से शेष राशि स्वीकार करने और दस्तावेज़ पेश करने के लिए कहा, तो आरोपी नंबर 1 दीपक जगदीश प्रसाद अग्रवाल ने विदेशी होने का बहाना बनाकर आज तक न तो दस्तावेज़ पेश किया है और न ही 30,00,000 रुपये की पूरी राशि नकद ली है। इससे तंग आकर शिकायतकर्ता कडोदरा पुलिस स्टेशन से उच्च न्यायालय में मुकदमा कर रहा है, लेकिन कडोदरा पुलिस एफएसएल रिपोर्ट का बहाना बनाकर समय बर्बाद कर रही है और परोक्ष रूप से आरोपियों का बचाव कर रही है। स्थिति अब इस तरह बिगड़ गई है कि पुलिस के लिए इससे ज्यादा शर्मनाक क्या हो सकता है कि राजस्थानी प्रवासी मारवाड़ी समुदाय का एक गरीब आदमी पुलिस के सामने बेबस खड़ा है जैसे कि वह कोई वेश्या हो, और कडोदरा का एक निजी जांच अधिकारी आरोपियों को अपने सामने कुर्सी पर बैठाकर शिकायतकर्ता का मजाक उड़ा रहा है और उस पर हंस रहा है?

हाल ही में, कुछ दिन पहले, आरोपी नंबर 3 राजेश जोशी ने शिकायतकर्ता को इमारत बेचकर डायरी पर हस्ताक्षर करके पैसे लिए थे। पैसे लेते हुए उसका सीसीटीवी फुटेज भी मौजूद है। हालांकि आरोपी ने शिकायतकर्ता को बेची गई संपत्ति का दस्तावेजीकरण नहीं कराया था, फिर भी वह 40 कमरों वाली इमारत के प्रशासक के पास किराया लेने गया, और शिकायतकर्ता की पत्नी ने उसे देख लिया। जब आरोपी राजेश जोशी पकड़ा गया, तो शिकायतकर्ता की पत्नी ने अशोक साहू को फोन करके आरोपी को बताया कि पति-पत्नी दोनों आरोपी को बताने ही वाले थे। इससे भड़के आरोपी ने पति-पत्नी से झगड़ा शुरू कर दिया। इसलिए, जब पति-पत्नी ने आरोपी को पकड़कर अपनी दुकान पर ले गए, तो आरोपी के साथ मौजूद एक व्यक्ति भाग गया और काडोदरा पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची और सभी शिकायतकर्ताओं और आरोपियों को काडोदरा पुलिस स्टेशन ले गई और शिकायतकर्ताओं को शाम तक हिरासत में रखा। वहां, असली शिकायतकर्ता और उसकी पत्नी की बात सुनने के बजाय, चोर ने कोतवाल को इस तरह डांटा जैसे कि शिकायतकर्ता ही आरोपी हो। पुलिस ने शिकायतकर्ता को धमकी दी कि उसने आरोपी का अपहरण किया है और उसकी पिटाई की। इसलिए, वहां मौजूद पीएसआई ने शिकायतकर्ता और उसकी पत्नी को धमकाना शुरू कर दिया और कहा कि उनके खिलाफ अपराध किया जाएगा।

संक्षेप में कहें तो, कडोदरा पुलिस निष्पक्ष नहीं है। कडोदरा पुलिस शिकायतकर्ता को आरोपी मानकर कडोदरा पुलिस चौकी में रखे हुए है, वहीं सूरत जिला परपंतीय समिति के अध्यक्ष छगनलाल दौलतराम मेवाड़ा ने कहा है कि यदि शिकायतकर्ता दोषी है, तो पुलिस को उसके खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए। इसके अलावा, छगनलाल मेवाड़ा ने राजस्थानी मारवाड़ी समुदाय के प्रति गुजरात पुलिस के पक्षपातपूर्ण रवैये की निंदा की है और पूरे समाज से मारवाड़ी समुदाय के साथ हो रहे अन्याय के प्रति जागरूक होने की अपील करते हुए मांग की है कि पूरे मामले की जांच एक उच्च पुलिस अधिकारी द्वारा की जाए और सच्चाई सामने आए।

आगामी होली पर्व के मद्देनज़र अहमदाबाद मंडल द्वारा विशेष यात्री प्रबंधन एवं सुरक्षा व्यवस्थाएँ

जीएनएस)। आगामी होली त्योहार के अवसर पर यात्रियों की संभावित अतिरिक्त भीड़ को ध्यान में रखते हुए पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल द्वारा व्यापक तैयारियाँ की जा रही हैं। होली पर्व के दौरान पश्चिम रेलवे द्वारा विभिन्न गंतव्यों के लिए कुल 684 ट्रेन ट्रिप्स संचालित किए जाएंगे, जिससे यात्रियों को अतिरिक्त सुविधा उपलब्ध हो सकेगी।

▸▸इस संबंध में मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई, जिसमें सभी संबंधित विभागों को यात्रियों की सुविधा, सुरक्षा एवं सुगम आवागमन सुनिश्चित करने हेतु ठोस एवं प्रभावी प्रबंध करने के निर्देश दिए गए।

▸▸यात्री सुविधाएँ एवं भीड़ प्रबंधन

▸▸यात्री होल्डिंग एरिया

अहमदाबाद रेलवे स्टेशन

▸▸कालूपुर साइड

कालूपुर साइड के होल्डिंग एरिया को तीन भागों में विभाजित किया जाएगा:

1. मल्टी मोडल ट्रांसपोर्ट हब (MMTH) बिल्डिंग का ग्राउंड फ्लोर
लगभग 43,056 वर्ग फुट
2. पैसेंजर रिज़र्वेशन सिस्टम (PRS कार्यालय के पास स्थित वर्तमान होल्डिंग एरिया
लगभग 4,133 वर्ग फुट
3. एलिवेटेड रोड के नीचे ऑटो-रिक्शा लेन एवं दोपहिया पार्किंग क्षेत्र का एक भाग
लगभग 4,844 वर्ग फुट

▸▸सरसपुर साइड

सरसपुर साइड के होल्डिंग एरिया को दो भागों में विभाजित किया जाएगा:

1. बुकिंग कार्यालय के पास स्थित वर्तमान होल्डिंग एरिया
लगभग 3,229 वर्ग फुट
2. बुकिंग कार्यालय एवं कूली मस्जिद की ओर जाने वाले मार्ग का क्षेत्र
लगभग 6,458 वर्ग फुट

साबरमती रेलवे स्टेशन

साबरमती स्टेशन पर लगभग 4,000 से 5,000 यात्रियों के बैठने की समुचित व्यवस्था की गई है। यातायात के सुचारु प्रवाह को सुनिश्चित करने हेतु प्रवेश एवं निकास द्वारों को अलग-अलग रखा गया है, जिससे भीड़ का बेहतर प्रबंधन किया जा सके।

इन होल्डिंग क्षेत्रों में पंखों, पेयजल एवं आवश्यक मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था की गई है, जिससे प्लेटफार्मों पर अनावश्यक भीड़ को नियंत्रित किया जा सके तथा यात्रियों का चरणबद्ध प्रवेश सुनिश्चित हो।

▸▸विशेष प्लेटफार्म प्रबंधन योजना:

▸▸अधिकांश होली स्पेशल एवं अधिक भीड़ वाली गाड़ियाँ प्लेटफॉर्म संख्या 8 से संचालित की जाएंगी, जिससे भीड़ का प्रभावी वितरण सुनिश्चित हो सके।

▸▸केन्द्रीकृत घोषणा प्रणाली (Centralised Announcement System) को सुदृढ़ किया गया है, ताकि यात्रियों को समय-समय पर आवश्यक सूचनाएँ उपलब्ध कराई जा सकें।

▸▸अतिरिक्त हेल्प डेस्क, टिकट काउंटरों पर पर्याप्त स्टाफ, पेयजल सुविधा, स्वच्छता व्यवस्था एवं प्रतीक्षालयों की नियमित मॉनिटरिंग सुनिश्चित की जाएगी।

सुरक्षा व्यवस्था

▸▸स्टेशन परिसरों एवं प्रमुख प्लेटफार्मों पर RPF एवं GRP कर्मियों की अतिरिक्त तैनाती की जाएगी।

▸▸RPF एवं वाणिज्य स्टाफ को आवश्यक VHF हैंडसेट उपलब्ध कराए जाएंगे, जिससे त्वरित समन्वय एवं प्रतिक्रिया सुनिश्चित हो सके। बैग चेकिंग अभियान को सघन रूप से चलाया जाएगा।

▸▸RPF CCTV कक्ष से ही वार रूम संचालित किया जाएगा, जहाँ से 24x7 निगरानी की जाएगी।

▸▸सादे वस्त्रों में RPF एवं GRP की CPDS (अपराध रोकथाम एवं जांच दल) टीमें संदिग्ध गतिविधियों पर सतर्क निगरानी रखेंगी।

▸▸चौबीसों घंटे CCTV निगरानी प्रणाली सक्रिय रहेगी तथा किसी भी स्थान पर भीड़ बढ़ने की स्थिति में फील्ड इकाइयों को तत्काल सतर्क किया जाएगा।

वाणिज्य एवं विशेष सहायता प्रबंध

▸▸मंडल स्तर पर वार रूम का गठन किया गया है, जहाँ से वरिष्ठ अधिकारी 24x7 निगरानी करेंगे।

▸▸भीड़ की स्थिति में उच्च अधिकारी स्वयं प्लेटफॉर्म पर उपस्थित रहेंगे।

▸▸यात्रियों को होली स्पेशल ट्रेनों एवं अतिरिक्त सेवाओं की जानकारी देने हेतु सोशल मीडिया, प्रेस विज्ञप्ति, नियमित ट्वीट एवं सार्वजनिक घोषणा प्रणाली का व्यापक उपयोग किया जाएगा।

▸▸टिकट चेकिंग स्टाफ को अतिरिक्त सतर्कता एवं मार्गदर्शन हेतु निर्देशित किया गया है।

दिव्यांग, वृद्ध एवं अस्वस्थ यात्रियों हेतु विशेष प्रबंध

▸▸सिविल डिफेन्स टीम को समर्पित सहायता दल के रूप में तैनात किया जाएगा, जो दिव्यांगजन, वरिष्ठ नागरिकों एवं अस्वस्थ यात्रियों को प्लेटफार्म तक पहुँचाने, ट्रेन में चढ़ाने एवं आवश्यक सहयोग प्रदान करेगी।

चिकित्सा टीम 24x7 उपलब्ध रहेगी।

▸▸पश्चिम रेलवे का अहमदाबाद मंडल यात्रियों को सुरक्षित, सुगम एवं सुविधाजनक यात्रा अनुभव प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। त्योहार के दौरान सभी व्यवस्थाओं की सतत निगरानी की जाएगी, ताकि यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

बिल्ड इंडिया इंफ्रा अवॉड्र्स 2026 में पश्चिम रेलवे दो पुरस्कारों से सम्मानित

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल का रेलवे सुरक्षा बल (RPF) यात्रियों की सुरक्षा, रेलवे संपत्ति की रक्षा और स्टेशनों पर सुरक्षित वातावरण बनाए रखने के लिए पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ कार्य कर रहा है। जून से नवंबर 2025 के दौरान RPF ने अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल कीं, जिन्होंने सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक प्रभावी व मजबूत बनाया। इस अवधि के प्रमुख कार्यों का विवरण इस प्रकार है:

1. रेलवे अधिनियम: अहमदाबाद डिविजन ने रेलवे अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत कुल 14,211 मामले दर्ज किए और इन अभियोजनों के दौरान 14,92,721 का जुर्माना वसूल किया। यह कार्रवाई स्टेशनों एवं ट्रेनों में अनुशासन और सुरक्षा को सुनिश्चित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण रही।

2. ऑपरेशन नन्हे फ़रिश्ते: ऑपरेशन नन्हे फ़रिश्ते के तहत अहमदाबाद, साबरमती, मणिनगर, महेसाणा सहित अन्य स्टेशनों से 69 नाबालिग बच्चों और 8 असहाय पुरुष/महिलाओं को बचाकर उनके माता-पिता, अभिभावक, चाइल्डलाइन या पुलिस को सुरक्षित सौंपा गया। मानवता से जुड़े इस कार्य ने RPF की संवेदनशीलता और तत्परता को उजागर किया।

3. ऑपरेशन अमानत: ऑपरेशन अमानत के अंतर्गत 211 लावारिस या खोए हुए सामान, जिनकी कुल कीमत 62,98,194 थी, RPF द्वारा बरामद कर यात्रियों को लौटाए गए।

4. ऑपरेशन सतर्क: अवैध गतिविधियों के विरुद्ध चलाए गए ऑपरेशन सतर्क में अहमदाबाद, साबरमती तथा कांकरिया यार्ड में 4,26,428 मूल्य की अवैध शराब के 47 मामले पकड़े गए और 7 आरोपियों को गिरफ्तार कर GRP को सौंपा गया। यह अभियान रेलवे परिसरों में सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुआ।

5. रेल मदद: Rail Madad पर प्राप्त 2,825 शिकायतों का त्वरित समाधान किया गया। इन शिकायतों का औसत निस्तारण समय मात्र 0.06 मिनट रहा, जो RPF की दक्षता और त्वरित सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण है। प्राप्त 973 फीडबैक में से 898 यात्रियों ने उत्कृष्ट या संतोषजनक रेटिंग दी।

6. ऑपरेशन रेल सुरक्षा: रेलवे संपत्ति की सुरक्षा के लिए RP(UP) एक्ट के तहत विशेष अभियान चलाया गया, जिसमें कुल 22 मामले दर्ज किए गए, जिनमें से 21 मामलों का सफलतापूर्वक पता लगा कर 46 बाहरी व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया।

7. ऑपरेशन यात्री सुरक्षा: यात्रियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए RPF ने चोरी और अन्य अपराधों पर त्वरित कार्रवाई की। यात्रियों के सामान चोरी के मामलों में 8 आरोपियों को पकड़ा गया और उन्हें GRP के हवाले किया गया। इसके अलावा BNS की विभिन्न धाराओं के 36 अभियुक्तों को भी गिरफ्तार कर आवश्यक कार्रवाई की गई।

8. CCTV के माध्यम से सफलता: अहमदाबाद स्टेशन पर CCTV निगरानी का प्रभावी उपयोग करते हुए चोरी के 10 मामलों का पता लगाया गया, जिससे अपराध नियंत्रण में तकनीक की भूमिका और मजबूत हुई।

9. ऑपरेशन समय पालन: ट्रेनों की समयपालन क्षमता (punctuality) को सुधारने के लिए भी RPF ने प्रभावी अभियान चलाया। अलार्म चेन पुलिंग (ACP) के 924 मामले दर्ज हुए, जिनमें से 859 मामलों में रेलवे अधिनियम की धारा 141 के तहत अभियोजन किया गया।

10. जन जागरण: यात्रियों और स्थानीय नागरिकों को सुरक्षा संबंधी जागरूकता देने के लिए RPF ने नियमित रूप से जन-जागरण कार्यक्रम आयोजित किए, जिनमें ट्रैक पार न करना, नशा मुक्ति, पत्थरबाजी रोकथाम, महिला सुरक्षा और मानव तस्करी जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर जागरूकता बढ़ाई गई। स्टेशन पर PA सिस्टम, बैनर, पोस्टर और RDN स्क्रीन के माध्यम से भी संदेश प्रसारित किए गए।

11. ट्रेन एस्कॉर्टिंग: ट्रेन एस्कॉर्टिंग के क्षेत्र में अहमदाबाद डिविजन ने उल्लेखनीय कार्य किया। प्रतिदिन औसतन 20 महत्वपूर्ण रात की ट्रेनों में RPF जवान तैनात किए गए, जबकि महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु प्रतिदिन औसतन 7 मिश्रित (महिला+पुरुष) दल एस्कॉर्टिंग में लगाए गए। इससे रात के समय यात्रा कर रहे यात्रियों, विशेषकर महिलाओं में सुरक्षा का भरोसा बढ़ा।

12. लेवल क्रॉसिंग गेट मामले: रेलवे फाटक क्षति के 69 मामलों में से 64 मामलों का सफलतापूर्वक पता लगाकर आरोपियों को गिरफ्तार किया गया, जिससे रेलवे संपत्ति को नुकसान पहुंचाने वाले तत्वों पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित हुआ।

13. वारंट निष्पादन: इसके अतिरिक्त, रेलवे अधिनियम और RP(UP) एक्ट से संबंधित कुल 74 वारंट भी RPF टीम द्वारा सफलतापूर्वक निष्पादित किए गए, जो उनके कानूनी दायित्वों के प्रति सजगता और कार्यकुशलता को दर्शाते हैं।

रेलवे सुरक्षा बल, अहमदाबाद डिविजन के लिए जून से नवंबर 2025 की अवधि उपलब्धियों से परिपूर्ण रही। यात्रियों की सुरक्षा, रेलवे संपत्ति संरक्षण और जन-जागरूकता के क्षेत्र में किए गए इन प्रयासों ने न केवल सुरक्षा व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाया है, बल्कि यात्रियों के विश्वास को भी मजबूत किया है। RPF अहमदाबाद डिविजन आगे भी इसी समर्पण और प्रतिबद्धता के साथ सेवा, सुरक्षा और सतर्कता की भावना से कार्य करता रहेगा।

मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके द्वारा कपडवंज एवं मोडासा स्टेशनों का निरीक्षण,जनप्रतिनिधियों व हितधारकों के साथ किया विस्तृत संवाद

जीएनएस)। परिचालन दक्षता की समीक्षा, आधारभूत संरचना के विकास कार्यों के मूल्यांकन के उद्देश्य से वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके द्वारा आज, 24 फरवरी, 2026 को मंडल के विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष के साथ तोरणा गुड्स शेड, कपडवंज रेलवे स्टेशन तथा मोडासा रेलवे स्टेशन का विस्तृत निरीक्षण किया गया। इस दौरान उन्होंने मोडासा रेलवे स्टेशन पर माननीया सांसद शोभनाबेन महेंद्रसिंह बरैया तथा अन्य जनप्रतिनिधियों के साथ संवाद किया और परिचालन संबंधी मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की।

वडोदरा मंडल के जनसंपर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने तोरणा गुड्स शेड में माल ढुलाई कार्यों की समीक्षा की तथा स्थानीय हितधारकों से संवाद किया। बैठक में उन्होंने ट्रेन परिचालन में सुधार, माल की सुगम आवाजाही, तथा उपयोगकर्ताओं द्वारा उठाए गए परिचालन संबंधी मुद्दों के समाधान पर चर्चा की गई। श्री भडके ने समयबद्ध लोडिंग एवं अनलोडिंग सुनिश्चित करने के लिए माल ग्राहकों के साथ बेहतर समन्वय पर बल दिया।

कपडवंज रेलवे स्टेशन के निरीक्षण के दौरान मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने मंडल के अधिकारियों सहित नगर पालिका के सदस्यों तथा स्थानीय नागरिकों के साथ बैठक की। बैठक में रोड अंडर ब्रिज (RUB) के चौड़ीकरण तथा संपर्क मार्गों के सुधार जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई, जिससे यातायात सुगम हो सके और यात्रियों को बेहतर सुविधा मिल सके। श्री भडके ने आश्वासन दिया कि उठाए गए मुद्दों पर संबंधित प्राधिकरणों के साथ समन्वय कर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

मोडासा रेलवे स्टेशन पर मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने माननीया सांसद शोभनाबेन महेंद्रसिंह बरैया, नगर पालिका के सदस्यों तथा एपीएमसी के प्रतिनिधियों के साथ संवाद किया। बैठक में नडियाद–शामलाजी रेल संपर्क को सुदृढ़ करने, सुरक्षा की दृष्टि से लेवल क्रॉसिंग (LC) गेटों के युक्तिकरण एवं बंद करने, गेहूं की लोडिंग, उर्वरक की अनलोडिंग तथा अन्य परिचालन संबंधी विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई।

श्री भडके ने दोहराया कि वडोदरा मंडल सुरक्षित, कुशल एवं यात्री-हितैषी रेल सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। यह दौरा जनप्रतिनिधियों, नागरिक निकायों एवं व्यापारिक हितधारकों के साथ सक्रिय सहभागिता का प्रतीक है, जिससे विकासात्मक एवं परिचालन संबंधी प्राथमिकताओं को समयबद्ध रूप से पूरा किया जा सके।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की आहट से कांपता आईटी जगत, भविष्य की आशंका और अवसरों के बीच खड़ा भारत का टेक्नोलॉजी साम्राज्य

जीएनएस)। तकनीक की दुनिया में हर नई खोज अपने साथ संभावनाओं का विशाल आकाश लेकर आती है, लेकिन साथ ही वह अनिश्चितता और बदलाव का एक ऐसा दौर भी शुरू करती है, जो स्थापित व्यवस्थाओं को हिला देता है। आज कुछ ऐसा ही दौर भारत के आईटी सेक्टर के सामने खड़ा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, जिसे भविष्य की सबसे बड़ी तकनीकी क्रांति माना जा रहा है, उसी ने इस समय आईटी कंपनियों के सामने एक अनदेखा भय खड़ा कर दिया है। यह भय केवल तकनीकी नहीं, बल्कि आर्थिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक भी है, क्योंकि यह उन लाखों लोगों के भविष्य से जुड़ा है, जिनकी पहचान और आजीविका इस उद्योग से जुड़ी हुई है। फरवरी 2026 का महीना भारतीय आईटी सेक्टर के लिए एक ऐसे झटके की तरह आया, जिसकी गूंज पूरे वित्तीय जगत में सुनाई दी। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के निफ्टी आईटी इंडेक्स में 20 प्रतिशत से अधिक की गिरावट दर्ज की गई, जो सितंबर 2008 के वैश्विक आर्थिक संकट के बाद की सबसे बड़ी मासिक गिरावट मानी जा रही है। यह गिरावट केवल संख्याओं का खेल नहीं है, बल्कि यह निवेशकों के विश्वास, कंपनियों के भविष्य और तकनीकी बदलाव की दिशा को लेकर गहरी चिंता का संकेत है।

आईटी सेक्टर, जो वर्षों से भारत की आर्थिक प्रगति का आधार रहा है, अचानक अस्थिरता के दौर में पहुंच गया है। इस सेक्टर ने न केवल देश को वैश्विक पहचान दिलाई, बल्कि करोड़ों युवाओं को रोजगार और सम्मानजनक जीवन भी प्रदान किया। बेंगलुरु, हैदराबाद, पुणे और गुरुग्राम जैसे शहर आईटी उद्योग की वजह से आधुनिक भारत के प्रतीक बन गए। लेकिन अब वही सेक्टर एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है, जहां भविष्य की दिशा को लेकर स्पष्टता कम और सवाल अधिक दिखाई दे रहे हैं।

इस गिरावट का सबसे बड़ा कारण आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को लेकर बढ़ती अनिश्चितता है। एआई ने यह संभावना पैदा कर दी है कि कई पारंपरिक आईटी सेवाओं की आवश्यकता कम हो सकती है। जिन कार्यों के लिए पहले सैकड़ों इंजीनियरों की जरूरत होती थी, अब वही काम एआई आधारित सिस्टम कुछ ही मिनटों में पूरा कर सकते हैं। यह बदलाव कंपनियों के लागत ढांचे, कर्मचारियों की जरूरत और व्यवसाय मॉडल को पूरी तरह बदल सकता है। इस संकट का असर लगभग सभी प्रमुख आईटी कंपनियों पर पड़ा है। Infosys के शेयर लगभग 20 प्रतिशत तक गिर चुके हैं, जबकि Tata Consultancy Services में करीब 19 प्रतिशत की गिरावट देखी गई है। Wipro और Tech Mahindra जैसी कंपनियां भी इस दबाव से अछूती नहीं रहीं और उनके शेयरों में भी उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई है। इन कंपनियों ने वर्षों तक स्थिरता और भरोसे का प्रतीक बनकर निवेशकों का विश्वास जीता था, लेकिन अब वही निवेशक भविष्य की अनिश्चितता को देखते हुए सतर्क हो गए हैं।

यह गिरावट केवल निवेशकों की प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि एक गहरे बदलाव की शुरुआत का संकेत भी है। एआई ने आईटी सेक्टर के पारंपरिक ढांचे को चुनौती दी है। पहले कंपनियां सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट, मेंटेनेंस और सपोर्ट सेवाओं के माध्यम से अपनी आय का बड़ा हिस्सा अर्जित करती थीं। लेकिन अब एआई आधारित ऑटोमेशन इन सेवाओं को तेजी से बदल रहा है। इससे कंपनियों के राजस्व मॉडल पर प्रभाव पड़ सकता है और उन्हें अपनी रणनीति को पूरी तरह पुनर्गठित करना पड़ सकता है।

इस स्थिति ने कर्मचारियों के बीच भी चिंता पैदा कर दी है। लाखों आईटी पेशेवर यह सोचने पर मजबूर हो गए हैं कि क्या उनकी वर्तमान कौशल भविष्य में प्रासंगिक रहेंगे। यह केवल नौकरी का सवाल नहीं है, बल्कि पहचान और आत्मविश्वास का भी प्रश्न है। आईटी सेक्टर ने एक पूरी पीढ़ी को आत्मनिर्भर बनाया, लेकिन अब वही पीढ़ी तकनीकी बदलाव के कारण असुरक्षा महसूस कर रही है।

हालांकि, यह तस्वीर पूरी तरह निराशाजनक नहीं है। कई विशेषज्ञों का मानना है कि एआई केवल खतरा नहीं, बल्कि एक अवसर भी है।

सोना वायदा में 801 रुपये, चांदी वायदा में 2512 रुपये और क्रूड ऑयल वायदा में 5 रुपये की नरमी

जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 179287.53 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 23059.27 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 156225.5 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का मार्च वायदा 39911 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 1595.95 करोड़ रुपये का हुआ। कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 17892.30 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना अप्रैल वायदा 160769 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 161233 रुपये और नीचे में 160295 रुपये पर पहुंचकर, 161598 रुपये के पिछले बंद के सामने 801 रुपये या 0.5 फीसदी गिरकर 160797 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंचा। गोल्ड-गिनी फरवरी वायदा 356 रुपये या 0.28 फीसदी गिरकर 128620 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल फरवरी वायदा 44 रुपये या 0.27 फीसदी गिरकर 16205 रुपये प्रति 1 ग्राम हुआ। सोना-मिनी मार्च वायदा सत्र के आरंभ में 158763 रुपये के भाव पर खूलकर, 158992 रुपये के दिन के उच्च और 157851 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 909 रुपये या 0.57 फीसदी गिरकर 158376 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-टेन फरवरी वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 158503 रुपये के भाव पर खूलकर, 158900 रुपये के दिन के उच्च और 157600 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 159096 रुपये के पिछले बंद के सामने 496 रुपये या 0.31 फीसदी गिरकर 158600 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ।

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा 267221 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 268130 रुपये और नीचे में 262712 रुपये पर पहुंचकर, 265333 रुपये के पिछले बंद के सामने 2512 रुपये या 0.95 फीसदी औंधकर 262821 रुपये प्रति किलो पर आ गया। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 1404 रुपये या 0.53 फीसदी की गिरावट के साथ 264370 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 348 रुपये या 0.13 फीसदी की तेजी के संग 265942 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा।

▸▸कमोडिटी वायदाओं में 23059.27 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 156225.5 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 17892.30 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 39911 पॉइंट के स्तर पर

मेटल वर्ग में 3517.37 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा फरवरी वायदा 8.95 रुपये या 0.77 फीसदी की तेजी के संग 1177.4 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि जस्ता फरवरी वायदा बिना बदलाव के 327 रुपये प्रति किलो पर आ गया। इसके सामने एल्यूमीनियम फरवरी वायदा 85 पैसे या 0.28 फीसदी की नरमी के साथ 305.95 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा फरवरी वायदा 85 पैसे या 0.45 फीसदी टूटकर 186.5 रुपये प्रति किलो हुआ।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 1402.77 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल मार्च वायदा सत्र के आरंभ में 6100 रुपये के भाव पर खूलकर, 6120 रुपये के दिन के उच्च और 6031 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 5 रुपये या 0.08 फीसदी गिरकर 6040 रुपये प्रति बैरल हुआ। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी मार्च वायदा 2 रुपये या 0.03 फीसदी गिरकर 6044 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा नैचुरल गैस फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 273.5 रुपये के भाव पर खूलकर, 274 रुपये के दिन के उच्च और 268 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 272.3 रुपये के पिछले बंद के सामने 4.2 रुपये या 1.54 फीसदी गिरकर 268.1 रुपये प्रति एमएमबीटीयू हुआ। जबकि नैचुरल गैस-मिनी फरवरी वायदा 4.1 रुपये या 1.5 फीसदी औंधकर 268.4 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर आ गया।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल फरवरी वायदा 951 रुपये पर खूलकर, 10.4 रुपये या 1.09 फीसदी घटकर 942 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 9369.43 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 8522.87 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 2851.16 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 304.23 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 29.30 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 328.20 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 528.55 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 855.13 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 9.48 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। जबकि कॉटन केंडी के वायदाओं में 1.28 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 9138 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 73201 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 33722 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 399593 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 65039 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 10616 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 16026 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 54950 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 17712 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 26919 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स मार्च वायदा 39901 पॉइंट पर खूलकर, 40032 के उच्च और 39901 के नीचले स्तर को छूकर, 10 पॉइंट बढ़कर 39911 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल मार्च 6100 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 1 रुपये की गिरावट के साथ 324 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस मार्च 280 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 1.9 रुपये की गिरावट के साथ 12.95 रुपये हुआ। सोना फरवरी 170000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 244 रुपये की गिरावट के साथ 356.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 300000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 251.5 रुपये की गिरावट के साथ 70 रुपये हुआ। तांबा मार्च 1200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 33 पैसे की नरमी के साथ 45.31 रुपये हुआ। जस्ता मार्च 340 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 65 पैसे की नरमी के साथ 4.86 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल मार्च 6000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 1.1 रुपये की गिरावट के साथ 316.5 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस मार्च 270 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 2.85 रुपये की बढ़त के साथ 23.4 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 150000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 68.5 रुपये की गिरावट के साथ 163 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 260000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 1528.5 रुपये की गिरावट के साथ 1735 रुपये हुआ। तांबा मार्च 1200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 3.22 रुपये की गिरावट के साथ 43.74 रुपये हुआ।